Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

आर्य जनता का
प्रतिनिधि मासिक

गौ

५० पैसे

१५ मई, १९६८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज के गौरव, यशस्वी, कर्मठ, महान् आर्य नेता

पं० आनन्दप्रिय जी

संचालक, आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा का शुभ सन्देश

"मुझे यह जान अत्यन्त हर्ष हुआ कि वर्तमान आर्यसमाज को महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज बनाने और संसार में आर्य-समाज व वेद का संदेश गुंजाने के लिए 'जन ज्ञान' प्रकाशन आरम्भ हो रहा है। मुझे आपकी शक्ति और योग्यता पर भरोसा है।

परमात्मा करे कि टंकारा की पावन ज्योति संसार में फैलाने का आपका संकल्प पूरा हो। मेरा आशीर्वाद, शुभकामनाएं और सहयोग सदा आपके साथ हैं।"

१ वैशाख, संवत् २०२५

—आनन्दप्रिय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धरती के प्रत्येक मानव के हृदय मन्दिर पर वेद ज्ञान की पावन पताका फहराने के लिए कृत संकल्प

आर्य जनता का अपना
प्रतिनिधि प्रकाशन

जन-ज्ञान

मासिक

सम्पादक
भगवानदेव शर्मा
संचालक
महर्षि दयानन्द योगाश्रम
टंकारा (गुजरात)

वार्षिक मूल्य ६)
एक प्रति ५० पैसे

विज्ञापन दरें

प्रति पृष्ठ १००)
आवरण का द्वितीय व चतुर्थ पृष्ठ २००)
आवरण का तृतीय पृ० १५०)

सम्पादकीय

जन-ज्ञान क्यों ?

आज धरती पर क्रन्दन और हाहाकार छाया है। मनुज के अंतर की पावन भावना स्वार्थ और भोग की ज्वाला में भस्म हो चुकी है। सत्य-ज्ञान लुप्त होकर अन्धकार में मस्तिष्क भटक कर मार्ग ढूंढ रहा है।

मार्ग दर्शन हेतु महर्षि दयानन्द ने आज से लगभग ९४ वर्ष पूर्व आर्य समाज आन्दोलन द्वारा जन कल्याण का आवाहन किया था किन्तु आर्य समाज भी समय के प्रवाह से अछूता न रह सका और वर्तमान को मोड़ देने का कार्य एक समस्या बना हुआ है।

अत: हम दृढ़ संकल्प और पवित्र भावनाओं के साथ महर्षि दयानन्द के महान लक्ष्य की पूर्ति के लिए 'जन-ज्ञान' का प्रकाशन आरम्भ कर रहे हैं। वर्तमान आर्य समाज को महर्षि दयानन्द के मार्ग पर चलाना और उस महान ऐतिहासिक संगठन को प्रबुद्ध कर संसार के प्रत्येक मनुष्य के हृदय तक वेद का पावन ज्ञान पहुंचाना हमारा प्रयत्न होगा।

हम क्या करेंगे इसकी घोषणा करना अभी उचित नहीं, फिर भी हम अभी इतना तो कह ही सकते हैं कि अपने प्राणों की अन्तिम सांस तक हम सत्य-धर्म की रक्षा के लिए अज्ञान की समाप्ति हेतु संघर्ष-रत रहेंगे।

परम पिता परमात्मा हमें शक्ति दे कि हम उसकी बताई राह पर दृढ़ता से चलते हुए उसपर सभी को चलाने में सफल हो सकें—

इस पवित्र कार्य में सभी का प्यार और सहयोग हमें मिलेगा ही—यह हमारा विश्वास है—

भगवानदेव शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युद्ध के नगाड़े बजाओ !

—भारतेन्द्रनाथ
(सम्पादक 'आर्योदय' नई दिल्ली)

सोने की वेला बीत गई, प्रतीक्षा की घड़ियाँ समाप्त हो गयीं। शत्रु सेनाएँ वैदिक परम्पराओं और भारत की महान् गौरव गरिमा को मिटाने बढ़ी चली आ रही हैं। हमारा सर्वस्व दांव पर लग चुका है।

सम्पूर्ण इतिहास में धर्म पर इतना बड़ा संकट कभी नहीं आया जितना आज मंडराया है। इसलिए माँ के वीर पुत्रों से मेरा आग्रह है कि तंद्रा त्यागो, शत्रु की चुनौती स्वीकार करो और युद्ध के नगाड़े बजाओ !

दयानन्द के वीर सैनिको ! जागो और अपनी आर्य सेना सजाओ ! माँ ने जिस हेतु हमें जन्म दिया था वह अवसर सिर पर आ चुका है। शत्रु की हुंकार से हमारा रक्त खौलना चाहिए। असुर दल की सत्ता का अस्तित्व मिटाने की तैयारी यदि हम नहीं करेंगे, तो कौन करेगा ?

लेखराम ने अपने रक्त से शुद्धि का चक्र चलाया था, धर्म प्राण श्रद्धानन्द ने सीने पर गोलियाँ खाकर धर्म-रक्षा का मार्ग प्रशस्त किया था शहीदों का बलिदान पुकार रहा है, सुनो ! उसकी पुकार, और वेद ज्ञान हाथ में लेकर अज्ञान का अस्तित्व मिटाने हेतु अभियान करो !

करो या मरो ! यह सत्य है। जीवन इष्ट है तो कुछ करना होगा। माँ का दूध पिया है तो उसका मोल चुकाना होगा। भारत को ईसालैंड बनाने का स्वप्न देखने वाले विदेशी पादरियों के षड्यन्त्र विफल करने के लिए आज आत्माहुति देने वाले वीरों की आवश्यकता है !

अस्त्र उठाओ ! सेना सजाओ और देश को, मानवता को बचाने के लिए आसुरी भावों के संहार का संकल्प लो ! यह आज की सबसे प्रथम आवश्यकता है। भाषण, प्रस्ताव और योजनाएँ मात्र व्यर्थ हैं अब तो सर्वस्व समर्पण की भावना से मर मिटने हेतु तैयार रहने वाले आर्य वीरों की आवश्यकता है !

'जन-ज्ञान' के इस प्रथम अंक द्वारा मैं आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य से आग्रह करूँगा कि वह समय की गति को पहचानें और आर्य समाज को महर्षि दयानन्द का आर्य समाज बनाकर उस लक्ष्य को पूरा करें जिसके लिए आर्य समाज की स्थापना की गई थी।

अब रक्त खौलना चाहिए, रणभेरी की आवाज सुनकर हृदय उछलना चाहिए ! कुछ करने की चाह हृदय में जागे ! वेद की पताका हाथ में लेकर विश्व विजय के लिए आर्य वीर निकलें—यह मेरी हार्दिक इच्छा है ! देखें कब सफल होती है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के तपोधन

स्वामी सत्यानन्दजी सरस्वती

का

शुभ आशीर्वाद

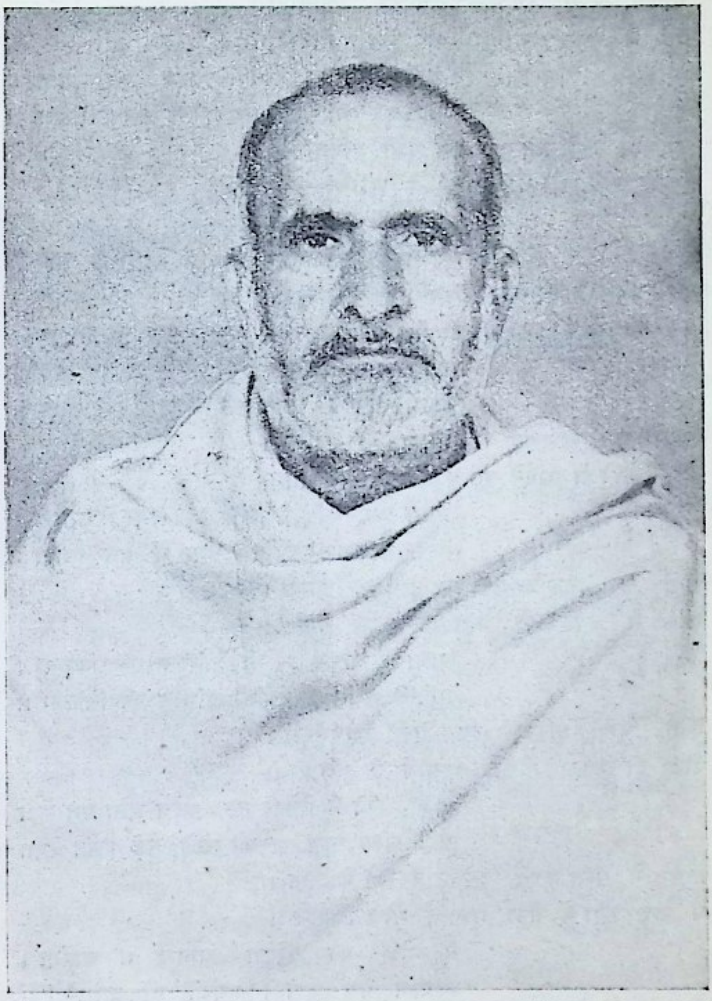

'जन-ज्ञान' के प्रकाशन का समाचार जान प्रसन्नता हुई। परमात्मा हमें शक्ति दें कि हम धरती के प्रत्येक मनुष्य के हृदय मन्दिर पर ज्ञान की पताका लहरा सकें। मेरा आशीर्वाद आपके साथ है।

वैदिक साधनाश्रम
यमुनानगर (अम्बाला)

—सत्यानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीनबन्धु दयानन्द

प्रकाशचन्द्र कविरत्न

गुरुदेव ऋषि दयानन्द आदित्य ब्रह्मचारी।
बैठे थे गंगा तट पर था दृश्य मनोहारी॥
इतने में एक नारी दुर्दैव की सताई।
प्रिय पुत्र का लिये शव रोती बिलखती आई॥
था मांस नहीं तन पर बस सूखी हड्डियां थीं।
आंखें धसीं हुई थीं गालों पै झुर्रियां थीं॥
मुरझाया हुआ मुख था बिखरे थे केश सारे।
थे पांव लड़खड़ाते, मग में क्षुधा के मारे॥
ढकने को लाज तन की कपड़ा नहीं था पूरा।
बेटे की लाश पर भी था! कफन अधूरा॥
थी एक ही तो उस पर जर्जर मलीन साड़ी।
हाथों से वही उसने थी बीच में से फाड़ी॥
साड़ी का एक टुकड़ा उसने पहन लिया था।
और दूसरे से अपने सुत का कफ़न किया था॥
आधा कफ़न भी उसने सुत—लाश से उतारा।
फिर वे कफ़न बहाया गंगा में पुत्र प्यारा।
अति करुणा जनक ऋषि ने जब दृश्य यह निहारा।
आंखों से लगी बहने आंसू की प्रबल धारा॥
चाचा के मरण पर भी आंसू न एक निकला।
भगिनी के निधन पर भी आंसू न एक निकला॥
देखी, दुखी दरिद्रा जब एक देश नारी।
रोये वो विकल होकर परमार्थ के पुजारी॥
सोचा, लगे थे जिनके ठट, वस्त्र अन्न धन के।
हा! शोक आज उनको लाले पड़े कफ़न के॥
बन्धन में ग्रस्त करते, क्रन्दन हैं देश के जन।
मैं कर रहा हूँ बैठा एकान्त मोक्ष चिन्तन॥
मैं मोक्ष का अकेला आनन्द न चाहूंगा।
कल्याण पथ करोड़ों मनुजों को बताऊँगां॥
व्रत ब्रह्मचर्य, सेवा का, प्रिय पुनीत धारा।
जग-ताप मिटाने को. जीवन 'प्रकाश' वारा॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युग प्रवर्तक दयानन्द !

राकेश रानी

महर्षि दयानन्द ने धरती के अन्धकार को दूर कर नया युग आरम्भ किया था वे चाहते थे कि जन्म से मृत्यु पर्यन्त प्रत्येक मनुष्य मुस्कराता रहे···ऐसे महापुरुष को कोटिशः प्रणाम

१८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद जब सारा देश निराशा और पराधीनता की चक्की में पिसकर अपने को भूलता जा रहा था, विदेशी-अराष्ट्रीय तत्त्व अपनी पूरी शक्ति से भारत का सर्वस्व समाप्त करने में लगे हुए थे, तब जिस महापुरुष ने एकाकी होते हुए भी सर्वत्र जागरण का सिंहनाद किया, वे थे गुजरात प्रदेश में उत्पन्न महर्षि दयानन्द सरस्वती !

१९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सारा संसार ही अपने आचार-विचार में नए परिवर्तन ला रहा था, विज्ञान की ज्योति से, अज्ञान स्वयं लुप्त होने की तैयारी कर रहा था, ऐसे में ऋषि दयानन्द ने संसार को जो सन्देश दिया वह नवीन होने के साथ ही भारत की पुरातन परम्पराओं के अनुकूल था।

आज सम्भवतः हम उनकी महत्ता की कल्पना न कर सकें किन्तु ब्रिटिश शासन के अत्याचारों से पीड़ित राष्ट्र को स्वराज्य का, मत मतान्तरों में बंटे मानव समुदाय को मानवता का, और बिखरे राष्ट्रों को एक विश्व साम्राज्य का मार्ग दिखाकर ऋषि दयानन्द ने युग क्रान्ति की आधार-शिला रखी थी।

महर्षि के अपने शब्दों में वे संसार में ऐसी विचारधारा प्रसारित करना चाहते थे—

"जिसका विरोधी कोई भी न हो सके"
जो तीन काल में सबको एक-सा
मानने योग्य हो"—
जो सत्य है उसको मानना मनवाना
और जो असत्य है उसको
छोड़ना और छुड़वाना मुझको
अभीष्ट है।
सर्व सत्य का प्रसार कर, सबको ऐक्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीति युक्त करा के सबको सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है "सर्व शक्तिमान परमात्मा की कृपा सहाय और आप्त जनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जाए।"

महर्षि के उक्त शब्द उनके मन को सर्वथा स्पष्ट रूप में हमारे सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

वे संसार-भर में महान क्रान्ति-यज्ञ आरम्भ करना चाहते थे, किन्तु वह क्रान्ति, नामों, राज्यों और अधिकारों की नहीं, अपितु विचारों की थी।

उनकी इच्छा थी कि सारा संसार "यत्र विश्वंभवत्येक नीडं" की वैदिक भावना के अनुसार एक परिवार की तरह रहे। संसार के सारे जाति, वर्ग, देश भेद मिट जाएँ और मनुष्य केवल मनुष्य बनकर आपस के सारे दुःख और सुख आपस में बाँट कर रहे, और धरती से, इर्ष्या, द्वेष, युद्ध कलह का विष सदा के लिए समाप्त हो जाएं।

उनकी कल्पनाएँ केवल कल्पनाएँ नहीं थीं, अपितु उन्होंने अपने विचारों को मूर्त्त-रूप देने के लिए जीवन का एक-एक क्षण लगा दिया।

उन्होंने अन्धविश्वासों का विरोध किया, अज्ञान रूढ़ियों को तोड़ने का आग्रह किया। नीच-ऊँच के भेद को मिटाया। नारी जाति की समानता का आग्रह किया, विदेशी शासन के विरुद्ध शंख फूंका। तात्पर्य यह कि भारत में, जहां उनका कार्यक्षेत्र रहा उन्होंने उन सभी तत्त्वों के विरुद्ध सक्रिय युद्ध घोषणा की, जिनसे राष्ट्र जर्जरित हो रहा था।

विदेशी राज्य के वे कितने विरुद्ध थे, यह उनके इस उद्धरण से स्पष्ट हैं—

"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए के पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

इस प्रकार पराधीन भारत को सर्वप्रथम स्वराज्य का सन्देश देने वाले स्वतन्त्रता संग्राम के योद्धा के रूप में, नारी जाति को अन्धकार गर्त से निकाल समाज स्तर पर ला बिठाने वाले उद्धारक के रूप में, दलित वर्ग को समान उन्नति का अवसर प्रदान कर सारे जन्मगत भेद-भाव मिटाने वाले सुधारक के रूप में, संसार के सारे मतभेदों को समाप्त कर, चक्रवर्ती विश्व साम्राज्य के उद्घोषक के रूप में, और मत-मतान्तरों, जाति वर्ग भेदों को जलाकर एकता के प्रबल समर्थक के रूप में महर्षि दयानन्द आधुनिक विश्व के महापुरुषों में सर्वोच्च स्थान रखते हैं।

योगीराज अरविन्द घोष के शब्दों में ऋषि दयानन्द "प्रकाश के वीर सैनिक, अध्यात्म संसार के योद्धा, मानव तथा संस्थाओं के निर्माता, तथा उन कठिनाइयों के निर्भीक विजेता थे, जो प्रकृति आत्मा के मार्ग में पैदा करती है। आध्यात्मिकता तथा क्रियात्मिकता—इन शब्दों का जो कि हमारी धारणा के अनुसार एक-दूसरे से पृथक् हैं सम्मिलत ही दयानन्द की परिभाषा है। वह ऐसे मनुष्य थे, जिनकी आत्मा में परमात्मा था, जिनकी आँखों में दिव्यदृष्टि थी, जिनके हाथों में अपनी कल्पना के अनुसार जीवन की मूर्तरूप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देने की शक्ति थी।"

विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ऋषि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भारत के मानस की भावनाओं को इन शब्दों में व्यक्त किया है—

"मेरा सादर प्रणाम उस गुरु दयानन्द को है जिसका उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था। उन्हें मेरा बारम्बार प्रणाम है। आधुनिक भारत के मार्ग दर्शक महर्षि दयानन्द सरस्वती को मैं सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।"

राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में जब संसार की आसुरी शक्तियाँ भारत की स्वतन्त्रता और महान् आदर्शों को मिटाने की तैयारी कर रही हैं, तब उनके यह अमर शब्द राष्ट्र के जन-जन के लिए, उत्साह, साहस और प्रेरणा का अजस्र स्रोत हैं—

"अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, इतना ही नहीं अपितु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हों तथापि उसका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे, इस काम में चाहे कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।"

—:o:—

आवश्यकता है

आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर जिसका ५० लाख रुपये का ट्रस्ट है, और जिसमें आठ सौ कन्याएं पढ़ रही हैं और जो गुजरात के महान् श्रेष्ठी सेठ नानजी भाई द्वारा स्थापित है। उस संस्था के सेकण्डरी विभाग के लिए एक M. A. B. Ed. अगर B. A. B. Ed अनुभवी आर्य समाज के सिद्धान्तों में रंगी हुई और सामाजिक कार्यों में रस रखने वाली एक देवी की आवश्यकता है जो प्रिन्सिपल (आचार्या) का कार्य संभाल सके। वेतन गुजरात राज्य के नियम के अनुसार प्राप्त होगा और रहने का स्थान मिलेगा।

आर्य मिशनरी भावों से प्रेरित अगर कोई बहन आपके ध्यान में हो और पोरबन्दर (सौराष्ट्र-गुजरात) में आकर बसना चाहती हो तो उसकी सूचना और आवेदन-पत्र भेजकर उपकृत करें।

भवदीय—
आनन्दप्रिय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सौराष्ट्र की राजधानी

राजकोट

में सर्वश्रेष्ठ रहने तथा भोजन आदि

की व्यवस्था के लिए

राजदूत होटल

में पधार कर हमें सेवा का अवसर दें।

आपकी सेवा करना और आपको संतोष देना

हम अपना कर्तव्य समझते हैं।

राजदूत—धर्मेंद्र कॉलेज के पास

राजकोट (सौराष्ट्र)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स मा ज वा द

—श्री अंतग—

अपने देश के एक विद्वान जब अमरीका गए तो वहाँ धन की प्रचुरता एवं निर्धनता की न्यूनता देखकर बोल उठे कि अमरीका तो हमसे भी अधिक सोशलिस्ट देश है।

यह कौओं की काँय-काँय में हंस के भी रस लेने के तुल्य ही था।

आइये, तनिक समाजवाद के वास्तविक रूप का निरीक्षण करें।

भारत के एक बहुत बड़े समाजवादी श्री अशोक मेहता हैं। आपने एक पुस्तक लिखी है Democratic Socialism. इसमें एक स्थान पर आप घोषित करते हैं, मुझे समाजवाद के लक्षणों में से निम्न लक्षणों से अधिक अच्छे लक्षण कहीं नहीं मिले :

Socialism is a working-class doctrine and movement aiming through the class struggle at the collective control of society, by the capture of the state machine by the workers and the establishment of self-government in industry.

ये लक्षण Encylopaedia of Labour Movement के Vol. III पृष्ठ १५४ पर लिखे हैं और वहीं से श्री मेहता जी ने इनको लिया है। अर्थात ये लक्षण किसी ऐरा-गैरा के लिखे हुए नहीं। ये इंग्लैण्ड की लेबर पार्टी द्वारा स्वीकार किये गए हैं और भारत के उक्त विख्यात समाजवादी नेता ने अपनी पुस्तक में इन्हें उद्धृत किया।

इसके अर्थ हैं—समाज कर्मचारी वर्ग का सिद्धान्त और आन्दोलन है, जो वर्ग संघर्ष द्वारा उद्देश्य प्राप्त करना चाहता है। उद्देश्य है समाज पर सामूहिक नियन्त्रण। उपाय है राज्य प्रपंच पर कर्मचारियों का अधिकार प्राप्त करना और उद्योग क्षेत्र में स्वशासन प्राप्त करना।

इस लक्षण के प्रकाश में जो कुछ पिछले दिनों बंगाल में हुआ है, वह एक समझ में आने वाली बात है। जो कोई भी समाजवाद का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष में समर्थन करता है, वह उक्त समाजवाद को लाने का यत्न करता है और फिर उस स्थिति को उत्पन्न करने में सहायक होता है, जो बंगाल में उत्पन्न हो रही है और निकट भविष्य में जिसके पूर्ण देश में व्याप्त होने की सम्भावना प्रतीत होने लगी है।

बंगाल में क्या हो रहा है? उसको प्रचलित शब्दों में यदि लिखा जाए तो वह है : (१) घिराओ, राज्य बल के आश्रय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर; (२) राज्य द्वारा सम्पत्ति को लूटने अथवा विनष्ट करने में प्रोत्साहन; (३) राज्य की सहायता से विचार प्रसार पर प्रतिबन्ध तथा (४) राज्य की सहायता से निजी उद्योग को विनष्ट करने का उपाय।

इस सबका उद्देश्य क्या वह नहीं है जो उक्त समाजवादी के लक्षणों में करने का निर्देश किया गया है ?

यह कहा जा सकता है कि बंगाल में कार्य करने वाले साम्यवादी (M) हैं, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इस सबको प्रोत्साहन देने वाले सारे समाजवादी दल हैं। इन दलों में नेहरूवादी कांग्रेस, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी इत्यादि भी गिनाए जा सकते हैं। इनमें वे लोग भी माने जाने चाहिएं, जो अन्य दलों में होते हुए भी यह कहते रहते हैं कि अमरीका तो भारत से अधिक समाजवादी है। तथा वेदों में और मनुस्मृति में समाजवाद है, ये नारे लगाते रहते हैं।

चोरी करना अधर्म है। परन्तु जो लोग चोर की चोरी करने में सफाई उपस्थित करते रहते हैं, वे निःसन्देह चोरी करने में जानबूझकर अथवा अनजाने में सहायक हो जाते हैं। वे लोग चोरी का प्रचार करने में सहायक नहीं होते क्या, जो सम्पन्न सुखी और सुलभ जीवन व्यतीत करने वालों को चोर कहने में मजा लेते हैं ? कुछ लोग तो जान बूझ कर ऐसा कहते हैं ? परन्तु अधिकांश लोग तो कांय कांय करने वांलों का अन्धानुकरण करने वाले होते हैं। धन-धान्य से सम्पन्न होना सुखी और सुलभ जीवन व्यतीत करना, न तो चोरी करने के लक्षणों में आता है, व ही निर्धन होना, दुःखी और कष्टप्रद जीवन व्यतीत करना, भलमनसाहत और न्यायप्रियता के लक्षणों में हैं। अन्तर कहीं और है। यह इन स्थितियों का अर्थ नहीं। मार्क्सवादी इन स्थितियों को बूर्जुआ (Bourgeosie) और अभावग्रस्त (Proletariat) कहते हैं। इनका अर्थ यदि एक वाक्य में किया जाए तो यह है कि ये स्थितियां नैसर्गिक मानव शक्तियों के न्यूनाधिक होने और राज्य का अयोग्यों के हाथ में चले जाने के कारण हैं।

सब मनुष्य एक समान नहीं हैं। मानव समाज में जहां कृष्ण और राम हैं, वहाँ कंस और रावण भी हैं। जहाँ स्पेन्सर और न्यूटन हैं, वहाँ हिटलर और मुसोलीनी भी हैं। जहां गाँधी और टैगोर हैं, वहाँ अमीचन्द और टीपू भी हैं। अभिप्राय यह कि शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक सामर्थ्य में मानव समान नहीं है। यह असमानता ही आर्थिक विषमता का कारण है। कभी-कभी कुछ एक के साथ अन्यायचरण में दुर्बल तथा नैतिकता विहीन सरकार का भी हाथ होता है।

सरकार तो सुधारी जा सकती है, परन्तु उक्त नैसर्गिक असमानता को मिटाया नहीं जा सकता। यदि बलपूर्वक इस स्वाभाविक असमानता को मिटाने का यत्न किया गया तो मानव पशु ही बन जाएगा जो स्वमेव उन्नत होने की अभिलाषा को छोड़ अपनी उन्नति के लिए दूसरे का मुख देखने लगेगा।

यही पिछले बीस वर्षों के समाजवाद के प्रसार एवं प्रचार का परिणाम हुआ है। अपने प्रत्येक काम में देश का मानव सरकार का मुख देखने लगा है। मनुष्य का कौन-सा निजी अथवा सार्वजनिक कार्य रह गया है, जिसमें मनुष्य बिना सरकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का मुख देखे आगे बढ़ सके ? मनुष्य तो कभी देखा भी जाता है जब वह अपना मार्ग स्वयं बनाने के लिए छटपटाता है, परन्तु समाजवादी राज्य में उस छटपटाने पर, तुरन्त नियन्त्रण लगाने का कानून पास हो जाता है। प्रायः नियन्त्रण व्यक्ति की उच्छृंखलता पर नहीं होते, वरन उसके क्रिया-कलाप पर होते हैं।

तनिक समाजवाद के एक मुख्य क्रिया कलाप का अध्ययन करें तो बात स्पष्ट हो जाएगी। समाजवाद का एक घोष है, पूर्ण राष्ट्रीयकरण।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने पूर्ण राष्ट्रीयकरण का यह नारा भुवनेश्वर में लगाया था। घटनावश पण्डित नेहरू इसके कुछ काल उपरान्त ही स्वर्गवास हो गए थे। यह वही नारा था, जो समाजवाद के उक्त लक्षणों से निकलता है।

इसका अर्थ है समाजवाद के घटकों के पूर्ण परिश्रम और उसके सम्पूर्ण फल पर राज्य का अधिकार हो। यहां एक बात को ध्यान में रखना चाहिए कि राष्ट्रीयकरण राष्ट्रीय नियन्त्रण से भिन्न बात है। नियन्त्रण होता है उच्छृंखलताओं को सुधारने का प्रयास और राष्ट्रीयकरण का अर्थ है राष्ट्र अर्थात् राज्य के अधिकार में कर देना।

उदाहरण के रूप में देश में प्रायः इस्पात के कारखाने हैं, तथा विदेशों से व्यापार करने की ट्रेडिंग कार्पोरेशन है। अथवा जैसे कुछ लोग बैंकों के राष्ट्रीयकरण करने की बात कर रहे हैं। नियन्त्रण तो बैंकों पर अब भी है, परन्तु राष्ट्रीयकरण का अर्थ है बैंकों में पूर्ण जमा धन पर राज्य का स्वामित्व हो जाना और उसके व्यय अथवा वितरण में सरकार का अधिकार हो जाना।

यदि यह हो जाय, अर्थात् देश के पूर्ण परिश्रम और उसके फल पर राज्य का अधिकार हो जाए तो मनुष्य के जीवन की प्रत्येक गतिविधि, माँ के पेट में आने से, शमशान में भस्म हो जाने के उपरान्त तक सरकार के अधीन हो जाएगी। कोल्हू के बैल की भाँति सब कार्य करेंगे, परन्तु वे अपने कार्य के निर्वाचन, कार्य काल, कार्य की विधि और कार्य में कुशलता अपनी इच्छा से नहीं रख सकेंगे। यह उनको उच्च अधिकारियों से बनाए नियमोपनियमों के अनुसार करना होगा और देश में सर्वोच्चधिकारी तो मन्त्री-मण्डल ही होगा।

यह अवस्था न तो व्यक्तिगत विकास में सहायक होगी और न ही स्वतन्त्र समाज के हित में। जो समाज इस सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण से बनेगी वह उन पालतू जानवरों की समाज होगी जो मनुष्य के कार्य के लिए पाले और सधाये जाते हैं। बैल, घोड़े, कुत्ते, शीत देशों में रेडियर इत्यादि।

समाज की तुलना मशीन से नहीं की जा सकती। कारण यह कि मनुष्य भले ही सरकारी मन्त्री-मण्डल के पूर्ण अधिकार में हो जाए, मशीन की भाँति निर्जीव नहीं हो सकेगा। उसमें चेतना और इच्छा तो रहेगी और यही उसे अपनी अवस्था से विद्रोह करने की प्रेरणा देगी।

उक्त विवेचना से एक बात और स्पष्ट हो जाती है। समाजवाद के उक्त लक्षणों का अभिप्राय यह भी निकलता है कि मानव समाज में दो वर्ग हैं। एक विचारक वर्ग और एक कर्मचारी वर्ग। कर्मचारी वर्ग का, जो विचारक वर्ग नहीं है, पूर्ण समाज पर अधिकार होगा। यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिकार राज्य के द्वारा चलाया जाएगा।

इसी का दूसरा नाम है पूर्ण राष्ट्रीयकरण और ऊपर यह स्पष्ट करने का यत्न किया गया है कि इसका अर्थ है पूर्ण समाज के घटकों का, कुत्ते बैलों की भाँति, मन्त्री-मण्डल के आदेश पर कार्य करना।

यदि पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपने भुवनेश्वर की घोषणा को कार्यान्वित करने में जुट जाते और उनके काल में चीन का आक्रमण तथा बाद में उनका अपना देहावसान बाधक न होता, तो वे अपने जादू के प्रभाव से भारत समाज को पशुओं का बाड़ा बना जाते।

परन्तु उनके निधन के उपरान्त भी अन्य तत्त्व हैं जो देश को इसी दिशा में ले जाने का यत्न कर रहे हैं। इन तत्त्वों को दो गुटों में बाँटा जा सकता है। एक तो कम्युनिस्ट हैं। इनमें डांगेवादी और मार्क्सवादी दोनों को ही समझना चाहिए। इन दोनों में अन्तर वर्तमान स्थिति में केवल व्यवहार में है, सिद्धान्त में नहीं। दूसरा गुट है उनका, जो अपने को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में समाजवादी कहते हैं। ये भी अन्ततोगत्वा राष्ट्रीयकरण की ओर ही देश को ले जाने का यत्न कर रहे हैं।

राष्ट्रीयकरण की दिशा में प्रथम पग है कानून द्वारा धर्मयुक्त अथवा अधर्मयुक्त दोनों प्रकार की आय को सीमित करना। नाम लेने की आवश्यकता नहीं। जो भी नेता अथवा दल धर्मयुक्त आय को सीमित करना चाहता है, वह निःसन्देह राष्ट्रीयकरण की ओर मुख कर चल रहा है।

अधर्मयुक्त (चोरी, डाका, धोखाधड़ी इत्यादि द्वारा की गई) आय तो रोकनी ही चाहिए। ऐसी एक पैसे की आय भी स्वीकार नहीं की जा सकती। इस पर तो सीमा बाँधने की बात ही नहीं हो सकती। जब कोई नेता अथवा दल आय पर सीमा की बात करता है, तो वह धर्मयुक्त आय पर ही करता है।

इसी दिशा में दूसरा पग है व्यय पर सीमा बांधना। व्यय भी धर्मयुक्त अथवा अधर्मयुक्त होता है। जब डाक्टर लोहिया थे, संसद के पिछले अधिवेशन में यह प्रस्ताव रखा कि मनुष्य को पन्द्रह सौ रुपया मासिक से अधिक व्यय करना वर्जित कर दिया जाए तो इसमें धर्मयुक्त व्यय अथवा अधर्मयुक्त व्यय की बात नहीं थी।

धर्मयुक्त व्यय है अपने परिवार का पालन-पोषण करना, अपने अथवा निर्धनों के बच्चों की शिक्षा पर व्यय करना; नैतिकता के प्रचार में व्यय करना, सत्य, धर्म और विचारों के प्रसार में व्यय करना। हमारे धर्म शास्त्रों ने यज्ञ करने को भी धर्मयुक्त माना है। यज्ञ का अर्थ है लोक कल्याण के कार्य करना। इस प्रकार के कार्यों पर व्यय करने को धर्मयुक्त व्यय माना जाता है।

अधर्मयुक्त व्यय है वेश्यागमन, चोरी डाकों के आयोजन, कानून भंग के आंदोलन इत्यादि। इसी प्रकार अनैतिकता के प्रचार करने, झूठ और चोरी के प्रचार इत्यादि में धन व्यय करने को अधर्मयुक्त व्यय करना कहते हैं।

डाक्टर लोहिया साहब का प्रस्ताव तो अधर्मयुक्त व्यय पर सीमा बाँधने का नहीं था। इस प्रकार के व्यय पर तो सीमा का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। ऐसे कार्यों पर तो एक पैसे का व्यय भी वर्जित माना जाना चाहिए। अतः डाक्टर साहब का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रस्ताव था धर्मयुक्त व्ययपर सीमा बाँधना।

मजेदार बात तो यह है कि भारतीय धर्म का नाम लेकर संसद में बैठे राजनीतिक दल के लोग भी डाक्टर साहब के प्रस्ताव के समर्थक हो गए थे।

कांग्रेस तो कदाचित् अपने अधर्मयुक्त व्यय पर सीमा बंध जाने का विरोध कर रही थी, परन्तु दूसरे दलके लोग किस प्रकार के व्यय पर सीमा का समर्थन कर रहे थे?

यह स्पष्ट ही है कि आय और व्यय पर सीमा तो धर्मयुक्त आय और व्यय पर सीमाएँ ही हैं। और यही तो राष्ट्रीयकरण है। उद्योगों पर सरकार का अधिकार, बैंकों पर अधिकार और व्यापार पर अधिकार उक्त दो सीमाओंके अर्थ ही तो हैं।

जो कुछ पिछले बीस वर्ष में भारत में हुआ है, वह इसी समाजवाद के विस्तार के परिणामस्वरूप ही हुआ है। इसका परिणाम ही है कि इस समय देश में असीम बेचैनी, विद्रोहात्मक भावना, अराष्ट्रीयता, अधार्मिकता, अनैतिकता और अनात्मीयता का विस्तार हुआ है। कांग्रेस जो जवाहर लालजी जैसे समाजवादियों की अनुगामी थी, दोषी तो है ही वे दल भी कम दोषी नहीं जो कांग्रेस के विरोध का नाम लेकर अथवा नाम न लेकर समाजवाद की मुख्य-मुख्य बातों का समर्थन करते रहे हैं।

यह कह देने मात्र से कि हम समाजवादी नहीं है अथवा हम कांग्रेस का विरोध कर रहे हैं, कोई इस वाद के विषैले प्रभाव से बच नहीं सकता। इस वाद की दिशा में न चलने से ही इस पाप से बचा जा सकता है।

कुछ लोग यह कह सकते हैं कि समाजवाद के अर्थ वह नहीं, जो ऊपर इस लेख में लिखे गए हैं। तो क्या हैं? यह उनका कर्त्तव्य है कि इसकी रूप रेखा बाँधें। यह कहना कि समाजवाद का अभिप्राय है लोक कल्याण की भावना, एकदम गलत है। लोक कल्याण तो सैद्धांतिक समाजवाद के बाहर रहकर भी होता देखा जाता है। पश्चिमी जर्मनी, जापान और फ्रांस में जहाँ आर्थिक उन्नति पर अथवा अर्थ के व्यय पर किसी प्रकार की सीमा नहीं, वहाँ समाजवादी देशों (रूस, चीन इत्यादि) से अधिक सुचारू रूप से लोक-कल्याण हो रहा है। लोक-कल्याण राज्य द्वारा कहीं भी सुचारू रूप से नहीं हुआ। यह व्यक्तियों से ही सदा सम्पन्न हुआ है।

इसी प्रकार समाजवाद और उद्योगीकरण दो भिन्न-भिन्न बातें हैं। उद्योगीकरण का व्यक्ति की आय-व्यय पर सीमा बाँधने से कोई सम्बन्ध नहीं।

धूर्त लोग तो जनता को धोखा देने के लिए लोक-कल्याण और उद्योगीकरण को समाजवाद का नाम देते हैं और कुछ मूर्ख उनके इस धोखे में आकर उनकी बात को दुहराने लगते हैं।

जितना अपार ऋण लेकर भारत की समाजवादी सरकार ने उद्योगीकरण करने का प्रयास किया है उससे बहुत कम रुपये से, इससे कहीं अधिक विकास स्वतन्त्र समाज कर सकता था।

स्वतन्त्र समाज का अर्थ उच्छृंखल समाज नहीं। उच्छृंखलों के नियंत्रण के लिए तो सुदृढ़ राज्य चाहिए। स्वतन्त्र समाज का अभिप्राय उस समाज से है, जिसमें घटकों को धर्म की सीमा में रहकर असीम उन्नति करने का मार्ग खुला हो। साथ ही जिसमें धर्मयुक्त आय करने की स्वतन्त्रता असीम हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपके लिए महाराणा द्वारा प्रस्तुत—

पोरबन्दर में बने हुए कपड़े

नए, आकर्षक डिजाइनों और रंगों में

सौराष्ट्र का एक छोटा-सा कस्बा जो कि उम्दा कपड़ों का घर है, वहीं पर बनते हैं कई तरह के बढ़िया महाराणा कपड़े···रंग और चमक-दमक में परम्परागत, परन्तु डिज़ाइन और बुनावट में नवीन, बिल्कुल नवीन !

कई तरह के महाराणा कपड़ों में से अपनी पसन्द का खरीदिए··· आधुनिक रंगों और डिजाइनों का अनोखा मनमोहक मिश्रण ! हमारे ठण्डे और शानदार सूती कपड़े भी देखना न भूलिए। हर तरह के वस्त्र और हर अवसर के उपयुक्त, आकर्षक और रंग-बिरंगे कपड़े।

हर तरह के वस्त्रों के लिए कपड़े साड़ियां शर्टिंग शूटिंग

अपने स्थानीय विक्रेता से खरीदिए महाराणा—पोरबन्दर में बने हुए कपड़े

महाराणा मिल्स

पोरबन्दर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सनातन राजनीति

–देवदत्त शास्त्री–

पुराने समय की एक कथा है। किसी राजा का एक पुत्र क्षेमदर्शी नाम वाला था। पिता के मरने पर उसका राज्य उससे छिन गया, और वह अत्यन्त दुखी अवस्था में राज्य छोड़कर जंगलों में घूमने लगा। घूमते हुए उसकी एक मुनि से भेंट हुई। उसने मुनि को अपना हाल बताकर पूछा :

"महाराज ! जो राज्य की इच्छा तो करता हो, परन्तु उसे प्राप्त न कर सके, ऐसे मुझ सरीखे व्यक्ति को क्या करना चाहिए। जहाँ मुझे शारीरिक कष्ट है, वहाँ मानसिक दुःख से भी मैं दुखी हूँ। जो लोग धन होने से सुख समझते हैं, मेरी दृष्टि में उनकी दशा दयनीय है। मेरे पास कितना ही धन था, परन्तु वह तो स्वप्न की तरह नष्ट हो गया।"

"महाराज ! मैं मरना नहीं चाहता, मैं जीवन में दैन्य नहीं चाहता, मैं दूसरों की रोटियों पर पलना भी नहीं चाहता और न ही मैं कोई नीच कर्म करना चाहता हूँ। इसलिए मुझे कोई ऐसा उपाय बताएँ, जिससे मैं सम्मानपूर्वक अपना राज्य पा सकूं।"

मुनि ने उसको उत्तर दिया :

"राजन् ! जैसा अब समझते हो कि सब कुछ अनित्य है, ऐसा पहले ही समझते तो यह दुःख क्यों होता ! जिन लोगों को ऐसा ज्ञान होता है वे ही तो बुद्धिमान् हैं और वे कभी दुखी नहीं होते। राजन् ! शोक और चिन्ता में इतनी शक्ति नहीं कि वह आए हुए कष्ट को दूर कर सके। इसलिए बुद्धिमान् विपत्ति आने पर शोक नहीं करते। भविष्यत् मेरा नहीं है और भूत भी मेरा नहीं रहा। मेरा तो वर्तमान है। इसलिए सोते हुए सुख का शोक करने से क्या लाभ तथा आने वाले सुख का विचार करके प्रसन्न होने से क्या लाभ ! जिस अवस्था में हो उस अवस्था में संतुष्ट रहो।"

"यदि तुम्हारे पास धन नहीं है, और वह धन किसी दूसरे के पास है, तो भी सहन करो। ईर्ष्या का भाव पैदा न होने दो। ऐसा करने पर मनुष्य श्री का भोग करता है।"

"जैसे तुम्हारा धन और तुम्हारे मित्र नष्ट हो गए इसी प्रकार दूसरों के भी नष्ट हो जाएँगे। यह विपदा सब पर समान रूप से आती है, अतः चिन्ता और दुःख क्यों किया जाय।"

"परन्तु, राजन् प्रतीत होता है कि यह ज्ञान तुझे तुष्ट नहीं कर सकता, इसलिए मैं तुझे राज्य की प्राप्ति का उपाय बताता हूँ। इस उपाय को करने से पहले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम्हें मान को त्यागना होगा। क्रोध, हर्ष और भय को तिलांजलि देनी होगी। वह उपाय यह है कि तुम्हें छुपकर शत्रुओं में ही रहना होगा।"

"जानते हो, बिल्व (फल) को तोड़ने के लिए उस पर दूसरा बिल्व ही मारा जाता है, इसी प्रकार तुम्हें भी शत्रु को उसके शस्त्र से मारना होगा। जाओ, शत्रु के नगर में रहो। वहाँ अपने मित्र बनाओ। राज्य के कर्मचारियों में भेद डालकर अपने स्वार्थ को सिद्ध करो। वहाँ तुम्हें तीन प्रकार के धर्मों का पालन करना चाहिए।

१. कुत्ते का धर्म—अर्थात् सदा जागते रहो। दूसरे को यह पता लगे कि यह सोया हुआ है, परन्तु अपने भीतर चैतन रहो।

२. मृग का धर्म—सदा भय का ध्यान रखो। जहाँ पर कुछ भी अनिष्ट की सम्भावना है, वहाँ से दूर हट जाओ।

३. कौए का धर्म—सदा शंकित रहो। विश्वास किसी पर न करो और स्वयं अवसर की तलाश करो। इन धर्मों का पालन करते हुए नीचे लिखे दो काम करने होंगे।

वहाँ तुम्हें मित्रों की सहायता से यह काम करना है—उस राजा की प्रवृत्ति उन कामों की ओर लगवानी है, जिन कामों पर बहुत-सा धन और बहुत-सा समय खर्च हो, फिर भी वे काम पूरे होने कठिन हों। बड़ी-बड़ी योजनाएँ उसके सामने रखो। उन योजनाओं के लुभावने फलों से उसे मोहित करो, ताकि उसका धन खूब खर्च हो। याद रखो जिस राजा की आर्थिक दशा निर्बल हो जाती है, उसका राज्य लड़खड़ाने लगता है। उसमें शत्रु से लोहा लेने की हिम्मत नहीं होती। इसलिए तुम्हें राजा के कोष-क्षय की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए।

दूसरा काम जो तुम्हें करना है—वह उस राजा को विलास की ओर झुकाना है। केवल राजा को ही नहीं प्रत्युत राज्य के प्रयोजन की प्रवृत्ति विलासमय जीवन की ओर करनी है। विलास पुरुष को पौरुष से हीन करता है। इसके लिए सुन्दर-सुन्दर बाग़-बग़ीचे बनवाने के लिए, विहार-स्थलों की रचना के लिए उसकी प्रवृत्ति बनानी है। इससे राजा का जहाँ धन खर्च होगा, वहाँ विलासी जीवन भी होता जाएगा। प्रजाजन भी तप और श्रम के जीवन को छोड़कर ऐश्वर्य के भोग के जीवन को गुजारने लगेंगे। तब राज्य में क्रान्ति होगी और तुम्हें अपने राज्य की प्राप्ति का अवसर मिलेगा। क्रान्ति होने से पहले ही तुम्हें नदियों के बाँध तथा पुल और दूसरे महत्त्व के स्थानों पर अपना नियंत्रण करना होगा।

राजन्! यह सारा कार्य शक्ति-सम्पन्न ही कर सकता है, कायर और भीरु नहीं कर सकता। इसलिए यदि तुम अपने भीतर क्षत्रि-भाव देखते हो, तो इस काम को करो। अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी। राजनीति का यह भी एक अंग है।

राजा ने हाथ जोड़कर मुनि से निवेदन किया—

"महाराज! मैंने पहले ही कहा था कि मैं छल और कपट से जीना नहीं चाहता। मैं अधर्मयुक्त कर्मों से प्राप्त होने वाला बड़े-से-बड़ा राज्य भी नहीं चाहता। जिसमें मुझे पाप की शंका न हो, पूर्णरूप से हितकर हो, ऐसे निष्कपट और सरल जीवन को मैं गुजारना चाहता हूँ। मैं आपके बताए हुए इन उपायों को करने में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असमर्थ हूँ। क्या कोई और उपाय नहीं, जिससे मैं अपने राज्य को प्राप्त कर सकूँ ?"

मुनि ने कहा—

"राजन् ! तुम योग्य दीखते हो। तुम्हारी वृत्ति धार्मिक है। तुम्हारा स्वभाव सरल है। मैं तुम्हें दूसरा उपाय बताता हूँ, जिससे तुम राज्य प्राप्त कर सकोगे। तुम्हें इस बात को सदा स्मरण रखना होगा— न ही विजय नित्य रहती है और न ही पराजय सदा रहती है। राजा का यह परम धर्म है कि वह जय और पराजय को तुल्य समझे। जय में मान न करे और पराजय में दुःख अनुभव न करे।"

"मेरे आश्रम में कुछ दिनों तक मिथिला-नरेश विदेह आयेंगे। मैं उनसे तुम्हारा सम्बन्ध जोड़ दूंगा। उनकी सहायता से तुम अपने राज्य को प्राप्त कर सकोगे।"

कुछ दिनों बाद मिथला-नरेश वहाँ आए। मुनि ने उनका सत्कार किया। बैठने पर मिथिला-नरेश से मुनि ने कहा—

"राजन् ! यह क्षेमदर्शी राजकुल में पैदा हुए हैं। ये कुछ दिन मेरे पास रहे हैं। मैं इनके स्वभाव को जान गया हूँ। ये दर्पण की तरह निर्मल हैं, शरत्कालीन चन्द्र की भाँति कान्तिमान् हैं। मैंने इनकी परीक्षा कर ली है। मुझे तो इनमें कोई दोष दीखता नहीं है। मैं चाहता हूँ कि मेरी भाँति इन पर विश्वास करो और इनको अपना मन्त्री बना लो। मन्त्री के बिना राज्य ठीक चलाया नहीं जा सकता। मन्त्री शुद्ध और बुद्धि-सम्पन्न होना चाहिए। यदि आप इसको अपना मन्त्री बना लेंगे, तो अवश्य ही आपके शत्रुओं को यह वश में कर लेगा। यदि युद्ध करने की भी आवश्यकता होगी, तो यह पीछे नहीं रहेगा। यह क्षत्रिय है और युद्ध करना इसका धर्म है। राजन् ! आप इसकी सहायता से अपने राज्य को दृढ़ करें, और आपकी सहायता से यह अपने खोए हुए राज्य को पा सकेगा।"

मुनि ने क्षेमदर्शी से कहा—"राजन् ! राज्य की प्राप्ति के लिए नीतिशास्त्र में यह भी उपाय बताया गया है कि जब अपने राज्य की प्राप्ति में स्वयं असमर्थ हो, तो किसी बड़े से संधि कर लेनी चाहिए। और, उसकी सहायता से अपना राज्य प्राप्त किया जा सकता है।"

मिथिला-नरेश ने मुनि की बात मान ली और क्षेमदर्शी को अपने साथ अपनी नगरी में ले गए।

मिथिला-नरेश ने उन्हें अपना मन्त्री बनाकर कहा—

"आपने अपने गुणों से मुझे जीत लिया है। आप अपनी आत्म-अवहेलना कभी न करें। मैं आपकी बुद्धि की, आपके पुरुषार्थ की और आपके निष्कपट भाव की प्रशंसा करता हूँ। आप अपने-आपको सदा विजयी समझें।"

मिथिला-नरेश ने कुछ समय के बाद अपनी लड़की का उससे विवाह कर दिया और समय आने पर अपनी सहायता के द्वारा उसे उसके पैतृक राज्य पर आसीन कर दिया।

शान्ति पर्व (१०४-१०६)

—:०:—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

टेरेलीन पेन्ट, टेरेलीन शर्ट, टेरीवुल, टेरीकोटन नाइलोन, टेरीलीन, बनारसी साड़ी आदि स्त्रियों तथा पुरुषों का सुन्दर कपड़ा मिलता है।

गोपीचन्द, ओमप्रकाश आर्य

नवा नाका रोड--राजकोट (सौराष्ट्र)

हेड आफिस

नेताजी क्लोथ स्टोर्स

नवा घी कांटा रोड

राजकोट (सौराष्ट्र)

ब्राँच

गोपीचन्द गोरधनदास

रेवड़ी बाज़ार शाप नं० १८

अहमदाबाद (गुजरात)

ब्राँच

नवा घी कांटा रोड

राजकोट (सौराष्ट्र)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भगवानदेव शर्मा

कच्छ की धधकती धरती

कच्छ ट्रिब्यूनल के निर्माण को स्वीकार करने से सम्पूर्ण कच्छ को खतरा

सन् १८१८ के ईस्ट इंडिया कम्पनी के गजेटियर वाल्टर हैमिल्टन जिल्द १ पृष्ठ ४६५, उसके पश्चात अंग्रेज शासन काल में सन १८६५ से १८७२ के सरकारी नक्शा और दस्तावेजों को देखने से तथा सन १९०७ के सिन्ध के गजेटियर का अवलोकन करने से, सन १९०९ के इम्पीरीयल गजेटियर आफ इण्डिया प्रोविंश्यल सीरिज जिल्द २) को पढ़ने से, सन १९१० में सिन्ध के अंग्रेज कमीश्नर के लिखित बयान पर नजर डालने से, सन् १८६९-७० के सिन्ध के जनरल रेवेन्यू रिपोर्ट तथा कच्छ के तत्कालीन असिस्टैन्ट पालिटिकल एजेण्ट एस० एन० रेक्ट के बयान को देखने से कच्छ, भारत के वर्तमान हिस्से का ही भाग रहा है। ब्रिटिश शासन काल के सन् १९३७-३८, ३९ और ४२ तक के राजनीतिक परिवर्तन के बावजूद अंग्रेजों ने सम्पूर्ण कच्छ को कच्छ-भुज राज्य (भूतपूर्व रियासत) का ही अंग माना है। ८ मई सन् १९४८ में जब कच्छ-भुज राज्य को भारत संघ में शामिल किया गया : उस समय इस क्षेत्र के नक्शे तथा जो दस्तावेज भारत सरकार को सौंपे गए थे : उनको देखसे से स्पष्ट जाहिर हो जाता है कि सम्पूर्ण कच्छ ऐतिहासिक तथा भौगोलिक दृष्टि से भारत का ही भाग है। उसमें किसी भी विवाद को कोई स्थान नहीं है। इन ऐतिहासिक तथ्यों से तो यह सिद्ध होता है कि 'वर्तमान पाकिस्तान के अधीन 'थरपारकर' तथा 'बदीन' का भाग भी भारत का ही है।

सन् १९४७ में देश का जब बटवारा हुआ, उस समय हमारे नेताओं ने इस क्षेत्र की ओर ध्यान नहीं दिया। यदि ध्यान दिया होता तो, पंजाब तथा बंगाल के समान सिन्ध का भी आधा भाग भारत को मिलता।

कच्छ की ओर भारत सरकार की उपेक्षा-नीति का पाकिस्तान सरकार ने लाभ उठाया। सन १९६० से पाकिस्तान सरकार ने इस क्षेत्र के लिए व्यवस्थित योजना बनाई। जिसके अन्तर्गत बदीन के हवाई मथक को मजबूत राडार का रूप दिया। कंजरकोट तथा छाड़बेट तक सड़कें बनाई गईं। पाइप लाइने लगाकर इस रेगिस्तान में पीने के पानी की तथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोशनी के लिए बिजली की व्यवस्था की यह सब कुछ इस लिए किया गया, जिससे आगे चलकर हमले के समय उनके फौजी जवानों को परेशानी न हो। और उन्हें सरलता से साधन पहुंचाने की सुविधा हो सके।

पाकिस्तान सरकार ने एक ओर तो अपने फौजी जवानों की सुविधा की ओर ध्यान दिया। दूसरी ओर सिन्ध के प्रसिद्ध मौलवियों का संगठन बनाकर उसके द्वारा सैकड़ों की संख्या में फकीरों की व्यवस्था की। जिनको कुछ समय ट्रेनिग देकर भारत के कच्छ क्षेत्र में हाजीपीर तथा लखपत के मार्ग से भेजा जाने लगा। कुछ समय इन फकीरों ने काले तथा हरे रंग के लबास को अपनाया। सन् १९६२ से भगवा वस्त्रधारी बनकर, मुस्लिम फकीरों ने सरहद पार कर भारत के क्षेत्र में प्रवेश करके, सीमा क्षेत्र में रहने वाले अबोध, अशिक्षित-मेवला, सोढा सुमरा आदि जंगली जाति के लोगों को लोभ, लालच, डरा-धमका कर मुसलमान बनाना शुरू किया।

मेवला, सोढा, सुमरा कौम, जिसकी जन संख्या लगभग तीन लाख के करीब होगी, इन लोगों को ऊंचे वर्ग के हिन्दुओं ने सदियों से घृणा की दृष्टि से देखा। इनके परिवार में जन्म लेने वाले बच्चों के नामकरण संस्कार तथा विवाह आदि संस्कारों में कोई ब्राह्मण जाने के लिए तैयार नहीं होता। उन्हें अछूत और नीच समझा जाता रहा। जिसका परिणाम यह निकला कि पाकिस्तान से आए हुए फकीरों ने इन जातियों के लोगों के संस्कारों सम्बन्धी समस्त कार्यों को अपने हाथों में लिया। उन्हें पता लगने पर वे उस परिवार में पहुंच जाते रहे; जिस परिवार में किसी बच्चे ने जन्म लिया होता है। वे नवजात बच्चे का हाथ, साथ में रखे कुरान पर रखवाकर कलमा पढ़कर उसका नाम महमद, करीम, मूसा फातमा, अयाश आदि रख देते हैं। जब यही बच्चे बड़े होते हैं, तो विवाह के समय पर भी संस्कार कराने की समस्या खड़ी होती है कोई हिन्दु ब्राह्मण उनका संस्कार कराना अपनी शान के खिलाफ समझता है। फकीर उस समय भी इस्लाम विधि से निकाह करा देते हैं।

कुछ वर्षों की इस परम्परा ने कच्छ के सीमा क्षेत्र में जैसे लगभग तीन लाख बहादुर, मेवला, सोढा, सुमारा आदि कौम के लोगों को मुसलमान बना दिया। उनके दिल और दिमाग में से राम और कृष्ण के प्रति जो श्रद्धा थी, उन्हें नष्ट करके उन्हें महमद और कुरान का भक्त बनाया गया भारत से उन्हें नफ़रत करना और पाकिस्तान से प्यार करना सिखाया गया पाकिस्तान से इन जातियों से तेजस्वी तथा वर्चस्व रखने वाले लोगों को आर्थिक मदद दी जाने लगी। पाकिस्तानी जासूसी को इनके यहां सहारा मिलने लगा। हमारी गफलत तथा मूर्खतापूर्ण मान्यत्ताओं ने भारत से वफादारी रखने वाले लोगों को भारत का दुश्मन बना दिया।

पाकिस्तान के इस भयंकर षड़यन्त्र का जब गुजरात के आर्य समाजी नेताओं को पता लगा तब उसकी तहकीकात करने का कार्य हमने अपने हाथ में लिया। १५ दिन के कच्छ प्रवास से हमें पाकिस्तान की तमाम योजनाओं का पता लग गया। हमने इसकी रिपोर्ट प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकार के कर्णधारों को दी। तथा वर्त-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मान पत्रों में भी उसके समाचार दिए। कुम्भकरण की निद्रा में सोने वाले हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। पाकिस्तान ने हमारी सरकार की गफलत का पूरा लाभ उठाया। अचानक हमला हुआ। अनुभवहीन निशान बाजों के कारण पाकिस्तान की मुराद पूरी न हो सकी। भारत सरकार को अपनी की गई गफलत का ख्याल आया। रक्षा की तैयारी की : परन्तु जहां तक कच्छ का सवाल है—वहां की रक्षा व्यवस्था अपूर्ण है— न के बराबर है। न सड़कें बनाई गई हैं न बिजली की कोई व्यवस्था है, न पानी की कोई व्यवस्था है। गत पाक युद्ध में कच्छ सरहद पर तैनात हमारे सैनिकों को प्यास के मारे तड़पना पड़ता था। पानी का उपयोग दवाई के समान किया जाता रहा। स्नान तो महीनों तक हमारे फौजी जवान न कर पाए। उस समय का दृश्य देखने से दिल कांपता था। आंखें आंसू सारती थीं—इस सरकार की कम-नसीब व्यवस्था पर जिसमें जवानों को पीने के लिए पूरा पानी भी नहीं मिलता था। धन्य है भारत धरणी तुम्हारे सपूतों ने राष्ट्र की रक्षा के सामने अपने शरीर की रक्षा को तुच्छ समझा, डटकर दुश्मन से मोर्चा लिया। राष्ट्र की रक्षा की। यह देश के लिए गौरव की बात थी।

भारत सरकार की लापरवाही से हम दुःखी थे। पाकिस्तानी जासूस फकीरों तथा साधुओं के वेश में भारत की कच्छ सरहद पार करके जो भयंकर कार्य कर रहे थे उससे हम चिन्तित थे। हमने पाक एजन्टों और जासूसों की इन गतिविधियों को रोकना अपना कर्तव्य समझा। और उसके मुकाबले में आर्य समाज की ओर से कर्मवीर पंडित आनन्दप्रियजी के नेतृत्व में कार्य शुरू किया। कच्छ जिले की सात तहसीलों में सात अनुभवी पंडितों की व्यवस्था की गई जिनका मुख्या काम :—

(१) पाक एजन्टों की गतिविधियों को रोकना।

(२) जो हिन्दु भाई इस्लाम स्वीकार करके मुसलमान हो चुके हैं—उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षा देना।

(३) मेवला-सोढा, सुमरा जाति के लोगों के धार्मिक संस्कार करवाना और उनका सम्बन्ध पूर्व के उनकी जाति के लोगों से करवाना।

(४) उन्हें भारत से वफादार बनाना।

(५) उनके बच्चों के शिक्षण की व्यवस्था कराना और सम्भव मदद करना था।

हमें इस बात का सन्तोष है कि सीमित साधनों के होते हुए भी हमने उन हजारों भाइयों को हिन्दू धर्म की दीक्षा दी है, जो कारणवशात मुसलमान बन चुके थे। कार्य बहुत करना बाकी है।

गुजरात राज्य की तमाम सैनिक तथा असैनिक गुप्त बातों की जानकारी पाकिस्तान को मिलती रहती है, जो नहीं मिलनी चाहिए। पता लग जाने का मुख्य कारण ऊंचे पदों पर देशद्रोही, पाक-परस्त मुस्लिम अधिकारियों की नियुक्ति है। गुजरात के आई० जी० पी० हमदाद अली हैं जिनके काले कारनामें आसाम क्षेत्र में प्रसिद्धि पा चुके हैं। उन्हें रखकर भी सरकार ने भारी भूल की है। गुजरात के भूतपूर्व मुख्य-मन्त्री स्वर्गीय शहीद श्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बलवन्तराय मेहता के वायुयान को घेर कर उसे पाक सैनिक वायुयानने नष्ट कर दिया। इसके पीछे भी उन पाक परस्त मुस्लिम अधिकारियों का हाथ था जो भारत में बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त किए हुए हैं। भारत सरकार को इस सम्बन्ध में भी गम्भीरता पूर्वक सोचना चाहिए।

कच्छ सीमा क्षेत्र की कोई समस्या नहीं थी। राजनीति से अनभिज्ञ हमारे नेताओं ने मूर्खतावश कच्छ सीमा विवाद को स्वीकार किया। ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री श्री विल्सन के दबाव में आकर तथा कथित कच्छ सीमा विवाद को एक ट्रिब्यूनल को सौंपने की महान गलती की। श्री विल्सन ने तत्कालीन प्रधान-मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को कहा··· आपका पक्ष मजबूत है आपको इसमें संकोच नहीं करना चाहिए। दस्तावेजी बातें आपके पक्ष में हैं। निर्णय आपके पक्ष में ही रहेगा। यह बातें सन १९६५ में लन्दन में हुई थीं। श्री शास्त्री के साथ उस समय विदेश मन्त्री श्री स्वर्ण सिंह भी थे। कच्छ की परिस्थितियों से अनभिज्ञ इन दोनों भोले-भाले नेताओं ने जानकारों से पूछे बिना विल्सन की बातों को मान लिया। ट्रिब्यूनल की नियुक्ति की गई। अंग्रेज अपनी पुरानी च ल चल गया। फूट डालो और राज करो।

भारत की जनता ने तथा संसार ने इस ट्रिब्यूनल का विरोध किया उनका कहना था कि विवाद कोई है नहीं। फिर तीसरी पार्टी को इसमें क्यों लाया जा रहा है। परन्तु हमारे कांग्रेसी नेताओं ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया। क्योंकि उनके सामने अपने देश तथा देशवासियों की चिन्ता कम थी; दुनिया वालों की चिन्ता अधिक थी। पाकिस्तान ने ट्रिब्यूनल के सामने कंजरकोट तथा छाड़बेट और अन्य भारत के मुख्य स्थानों पर अपना अधिकार सिद्ध करने के लिए लगभग एक हजार मुद्दे पेश किए। और एक विस्तार पूर्वक फिल्म भी बताई। और कुछ (जाली) दस्तावेज भी पेश किए। भारत सरकार की ओर से लगभग ५०० चित्र पेश किए गए। हमारा पक्ष बहुत ही कमजोर पेश किया गया। क्योंकि इस क्षेत्र से अनुभवहीन लोगों को ट्रिब्यूनल के सामने केस पेश करने के लिए नियुक्त किया गया था। ऐतिहासिक तथा भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो हम दावे के साथ कह सकते हैं कि सिन्ध का थारपारकर तथा बदीन का क्षेत्र भी भारत को मिलना चाहिए।

भारत सरकार की स्थिति एक ऐसे ज्योतिषी की सी है, जो रात को एक खाही में पड़ा चिल्ला रहा था—मुझे निकालो—मुझे निकालो। किसी राहगीर ने ज्योतिषी को खाही में पड़ा देखकर उससे खाही में गिरने का कारण पूछा। ज्योतिषी ने कहा—'रात को मैं नक्षत्रों की तहकीकात करने निकला था। मेरी नज़र आकाश की तरफ थी। नीचे का मुझे कोई ख्याल नहीं रहा। इसी कारण खाही में गिर पड़ा। राहगीर ने उस ज्योतिषी को कहा 'ज्योतिषी जी महाराज आकाश के नक्षत्रों की तहकीकात करने से पूर्व आप अपने पांव तले की धरती की तहकीकात कर लेते तो आपकी यह हालत न होती।

भारत सरकार की हालत ठीक इसी प्रकार के ज्योतिषी की सी है। वह अपने देश और देशवासियों का ध्यान किए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिना अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को प्राथमिकता देती है। जिसका परिणाम यह निकलता है कि हमें भविष्य के लिए पछताना पड़ता है। दिन प्रतिदिन हमारे सामने नई-नई समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। बिना किसी कारण के, नेताओं की मूर्खता तथा हठधर्मी वश हम अपने देश की पवित्र भूमि, कभी चीन को तो कभी पाकिस्तान को यह कहकर देते चले जा रहे हैं कि—'यह तो बंजर, बिन उपयोगी भूमि है—इसको दे देने में कोई हानि नहीं है।'

यह सोचने से पूर्व सरकार यह क्यों नहीं सोचती कि ऐसा करते रहने से दुश्मन धीरे-धीरे हमारे समीप आकर हमारे सिर पर सवार हो जाता है। और सीमान्त क्षेत्र की भारतीय प्रजा में भय और आतंक की परिस्थिति पैदा होती है। और वे सीमान्त क्षेत्र छोड़कर किसी सुरक्षित स्थान की ओर जाने पर मजबूर हो जाती है। इससे दुश्मन के लिए रास्ता साफ हो जाता है। और वह कदम आगे बढ़ाने की कोशिश करता है। यही स्थिति आज कच्छ के भारतीय नागरिकों के सामने खड़ी हो गई है। संसद द्वारा कच्छ की ३५० वर्गमील भूमि पाकिस्तान को देने की घोषणा करने पर कच्छ की भारतीय जनता अपने-आपको सुरक्षित नहीं समझती। भारत सरकार की अपनाई गई नीति से कच्छ की प्रजा खतरा महसूस करने लगी है। कच्छ की भारतीय प्रजा को भारत सरकार पर अब विश्वास नहीं रहा। वहाँ की हिन्दू प्रजा सीमा क्षेत्र से अपने परिवारों को हटाने पर मजबूर हो गई है। कच्छ के मुसलमान खुल के कह रहे हैं कि—**हँस के लिया रेगिस्तान लड़के लेंगे कच्छस्तान,**" "**चमक उठी तलवार हैदर की।**" अयूबखान ज़िन्दाबाद पाकिस्तान ज़िन्दाबाद। नाराय तकदीर अल्लाहो अकबर। इन नारों ने कच्छ के हिन्दुओं में भैय पैदा कर दिया है। वे अपने सिर पर लटकती तलवार महसूस कर रहे हैं—उनकी जान खतरे में है।

आज कच्छ तथा उत्तर गुजरात के बनासकांठा क्षेत्र में सैकड़ों की संख्या में पाकिस्तानी जासूस कार्य कर रहे हैं। नित्य कच्छ के 'हाजीपीर' तथा 'लखपत' के मार्ग से और बनासकांठा के 'सुई गांव' तथा 'डीसा' के मार्ग से ये लोग भारत क्षेत्र में आते-जाते हैं। कच्छ में इनकी गतिविधियों में मदद करने वाले हैं—नलिया (जहाँ गुजरात के मुख्य मन्त्री श्री बलवन्तराय महता के वायुयान को पाक के सैनिक वायुयान ने नष्ट किया था) से १२ मील दूर 'कोठारा' गांव के एक तथाकथित प्रसिद्ध कांग्रेसी मुसलमान डा० मुंशी। इनके यहाँ ट्रांसमीटर आदि ऐसे साधन हैं, जिससे भारतीय क्षेत्र में होने वाली तमाम गतिविधियों की जानकारी पाकिस्तान को दी जाती है। उत्तर गुजरात में बनासकांठा जिले में पाक जासूसों को मदद करने वाले हैं—पालनपुर की मस्जिद के बड़े मौलवी साहब। इस बड़े मौलवी साहब की कोशिशों से डीसा तथा सुई गांव के सरहदी क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण नक्शे तथा दस्तावेज़ कुछ समय पूर्व पाकिस्तान भिजवाए गए। इन महत्त्वपूर्ण नक्शों दस्तावेजों के गुम होने की गुजरात विधानसभा में भी ज़ोरदार चर्चा उठाई गई थी। सरकार ने इस पर पर्दा डालने की कोशिश की और कहा "ऐसा नहीं हुआ है।" परन्तु सत्य यही है कि महत्त्वपूर्ण नक्शे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और दस्तावेज़ पाकिस्तान पहुँच चुके हैं।

राष्ट्र की यह कमनसीबी समझो कि तारीख ८ मई १९४८ को भारतीय संघ में कच्छ-भुज राज्य शामिल करते समय इस क्षेत्र सम्बन्धी 'इन्स्ट्रमेंट आफ एक्सशन' की फाइल (जिसमें महत्त्वपूर्ण नक्शे और दस्तावेज़ थे) नई दिल्ली स्थित आफिस से गुम किया जा चुका है। इस महत्त्व-पूर्ण फाइल के अभाव में ट्रिब्यूनल के सामने हमारा केस कमजोर रहा है। इस बात का पता तब लगा जब लण्डन स्थित भारतीय हाई कमीशन ने कच्छ के महा-राव श्री हिम्मतसिंह को पत्र लिखकर पूछा कि—"क्या आपके पास उक्त फाइल की कोई नकल है ?" कच्छ के महाराव ने उत्तर दिया—"भारत संघ में शामिल होते समय सम्बन्धित फाइल भारत सरकार को सौंपी गई थी। हमारे पास उसकी कोई प्रतिलिपि नहीं है।" हम हाथ मलते रह गए पाकिस्तान अपने षड्यन्त्र में सफल हो गया।

पाकिस्तान का प्लान सम्पूर्ण कच्छ पर कब्जा करना है। जिसके लिए उन्होंने योजना बद्ध कार्य शुरू कर दिया है। गत दो-तीन मासों से पाकिस्तानी जासूस यंत्र चालित नौकाओं के मुन्द्रा तथा झखाऊ बन्दरों पर सैकड़ों की संख्या में पाए गए। गत ७ जनवरी से २८ फरवरी तक लग-भग ३२ नौकाओं और ५४२ पाकिस्तानियों को पकड़ा जा चुका है। १९-२० फरवरी को ३ और पाकिस्तानी नौकाओं तथा ५८ व्यक्तियों को पकड़ा गया, जिसमें से कई अरबी भी हैं।

पाकिस्तान इस समय शान्त है—वह ट्रिब्यूनल के निर्णय के अमल करने की राह देख रहा है। ट्रिब्यूनल के निर्णय को अमल में लाने से, उन्हें कच्छ का वह पर्वतीय ऊँचाई वाला क्षेत्र मिलेगा, जो इस क्षेत्र में समुद्र का पानी भर जाने पर महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस पर्वतीय क्षेत्र को प्राप्त करने के पश्चात् पाकिस्तान भावी आक्रमण के समय, भारतीय सैनिकों को वहाँ से हटाने के लिए सिन्ध नदी के पानी को 'रहीम की बजार' की तरफ से छोड़ने की योजना बना चुका है। जिससे यह क्षेत्र जलमग्न हो जाए और सरलता से कच्छ का काफी क्षेत्र अपने कब्जे में कर सके।

पाकिस्तान के भूतपूर्व विदेश-मन्त्री मियां जुलफिकार अली भुट्टो तारीख ७ मार्च को नवाबशाह में हुई वकीलों की एक सभा में कह चुके हैं कि करीमशाही चौकी तक का क्षेत्र पाकिस्तान का है जिसको प्राप्त करने के लिए हमें हर प्रकार की कोशिश करनी चाहिए।

पाकिस्तान के बनाए गए प्लान अनु-सार सम्पूर्ण कच्छ जिसके अन्तर्गत मुन्द्रा, माण्डवी, नवलखी तथा कण्डला के महत्त्व-पूर्ण बन्दरों को भी अपने कब्जे में करना है। इस योजना को क्रियात्मिक रूप देने के लिए पाकिस्तान सरकार के सैकड़ों की संख्या में अनुभवी लोग पासपोर्ट लेकर कुछ वर्षों से भारत भेजे हुए हैं। समय मर्यादा पूरी हो जाने पर भी ये लोग अभी तक पाकिस्तान नहीं लौटे हैं। हमारी सरकार इन लोगों को तलाश करने में असफल रही है। गुजरात सरकार ने गत मास विधानसभा में इस बात को स्वीकार किया है कि ऐसे पाकिस्तानी २५६ व्यक्ति अभी भी राज्य में हैं। जिनकी जाँच की जा रही है। भारत सरकार की इस गफ-लत ने कच्छ के लिए खतरा पैदा कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिया है।

२० वर्ष का इतिहास साक्षी है कि पाकिस्तान ने भारत के साथ विश्वासघात और धोखेबाजी ही की है। उन्होंने अभी किसी वचन का पालन नहीं किया। कच्छ ट्रिब्यूनल के निर्णय के पश्चात् अब पाकिस्तान बंगाल और बिहार के सीमा की भारतीय भूमि पर दावा करने लगा है। पाकिस्तान की हालत तो यह है कि मरज़ बढ़ता ही गया ज्यूं-ज्यूं दवा की। ऐसी हालत में कच्छ ट्रिब्यूनल के निर्णय को मानना देश के लिए खतरनाक सिद्ध होगा। कच्छ ट्रिब्यूनल ने एवार्ड में स्वीकार किया है कि 'न्याय और सत्य की दृष्टि से नहीं; परन्तु राजनैतिक दृष्टि से दोनों देशों के मध्य स्थायी शान्ति स्थापित हो, इसलिए यह निर्णय लिया गया है। सत्य और न्याय के विरुद्ध जाकर राजनैतिक दृष्टि से किए गए निर्णय को मानना भयंकर ऐतिहासिक भूल होगी। ट्रिब्यूनल के निर्णय को इसलिए भी नहीं मानना चाहिए क्योंकि उन्होंने मूल बातों की अवहेलना की है और जो निर्णय दिया है उसमें भी ट्रिब्यूनल के सदस्य सम्पूर्ण एक मत नहीं हो सके। जिस बात को सर्वसम्मति से स्वीकार न किया गया हो इससे यह सिद्ध होता है कि उसमें अवश्य कोई राजनैतिक चाल चली गई है। जिसको मानने से पूर्व गम्भीरतापूर्वक समझ लेना आवश्यक है। अन्यथा राष्ट्र के भविष्य के लिए भयंकर भूल साबित होगी। ऐसी परिस्थिति में कच्छ ट्रिब्यूनल के निर्णय को ठुकरा देना ही राष्ट्र के हित में है अन्यथा भारत को सम्पूर्ण कच्छ से हाथ धोने पड़ेंगे।

—:o:—

अन्न-चिंतन

तद्धिसमृद्धं यत्रात्ता कनीयान् आद्यो भूयान्।
—खानेवाले कम हों और खाना अधिक हो,
यही समृद्धि का स्वरूप है।
नन्नेन होदं सर्वं गृहितम्।
—अन्न ने सबको जकड़ रखा है।
अन्नं वै विशः।
—अन्न ही प्रजा का आधार है।

—शतपथ ब्राह्मण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

कन्याओं की सर्वश्रेष्ठ विद्यापीठ

आर्य कन्या महाविद्यालय

आत्माराम पथ--बड़ोदा (गुजरात)

इस संस्था में देश-विदेश की सैकड़ों कन्याएं प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से आश्रम जीवन में रहकर विद्या अभ्यास कर रही हैं। सुन्दर, रमणीय स्वस्थ वातावरण है।

अपनी कन्याओं को, आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा--(गुजरात) में अवश्य प्रवेश करावें।

शिक्षा का माध्यम--हिन्दी और गुजराती है। विशेष जानकारी के लिए लिखें--

आचार्या

आर्य कन्या माहविद्यालय

आत्माराम पथ, बड़ोदा (गुजरात)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सफलता चाहिए तो लेख पढ़िए और उस पर आचरण भी कीजिए

सफलता के सात सूत्र

—विलियम लेडरर—

हेनरी कैसर के बारे में हवाई द्वीप के लोगों में यह कहावत है कि यदि वे ऐसे पेड़ के नीचे खड़े हों जिससे नारियल टूटकर गिर रहा हो तो वह कैसर की सपाट और चिकनी खोपड़ी को शायद ही अपना लक्ष्य बना सके। तात्पर्य यह है कि तूफानी गति से काम करने वाले वे महोदय एक स्थान पर अधिक समय तक कदापि नहीं ठहरते। वे अस्सी वर्ष की अवस्था में भी किशोरों की-सी तेजी से दौड़-धूप करते हैं।

कार्य से निवृत्त होने की बात तो वे कभी सोचते ही नहीं। इस समय वे हवाई के एक ऐसे क्षेत्र में, जो पहले वीरान पड़ा था, पचास हजार व्यक्तियों की सामुदायिक आवास-व्यवस्था का निर्माण कर रहे हैं। वे एक अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सा-केन्द्र और पिछड़े देशों के उद्योग, कृषि और शिक्षा के विकास में सहायता देने की प्रणाली की योजना भी बना रहे हैं।

- कैसर अपनी बात को बहुत जोर-शोर तथा तड़क-भड़क के साथ रखते हैं। वे हरेक योजना की बड़ी सख्ती किन्तु मजे से नुक्तचीनी करते हैं। किसी निर्माण-कार्य का निरीक्षण करते समय वे अपने हाथों को हवाई चक्की की तरह तेजी से हिलाते रहते हैं और सामने पड़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति को तेज आवाज में आदेश देते या उससे पूछताछ करते हैं। उनका कारोबार सारी दुनिया में फैला हुआ है और उससे प्रतिवर्ष करीब एक अरब डालर की आय है।

हाल में मैंने उन्हें जिस तरह काम करते देखा उससे यह विश्वास होना कठिन है कि आरम्भ में वे एक असफल व्यक्ति थे।

१८९५ में जबकि १३ वर्ष की अवस्था में उन्होंने सबसे पहले अपने नगर स्प्राउट ब्रुक, न्यूयार्क, में अपने लिए काम की तलाश शुरू की तो लोगों ने उन्हें नौकरी देने से इनकार कर दिया। भला उन-जैसे छोकरे को कोई क्यों नौकरी देने लगा? दुर्बल और शरमीला लड़का। जिस काम को भी हाथ में लेता उसका गड़बड़-घुटाला करके रख देता।

वर्षों प्रयोग और गल्तियों से सीखते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुए कैसर को कुछ ऐसे सूत्र हाथ लगे जिनके बारे में उनका दावा है कि उन्हें साहस के साथ अमल में लाने वाले का सफलता वरण किए बिना न रहेगी। अब वे विनम्रतापूर्वक कहते हैं, "मैंने जो कुछ किया है उसे हर कोई कर सकता है। मेरे सात सूत्रों को अपनाने वाले व्यक्ति की सफलता अवश्यम्भावी है। कैसर ने अपने इन सूत्रों को बड़ी सावधानी से मुझे समझाया।

पहला सूत्र—प्राय: लोग कार्य तथा मौलिक विचार करने की अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं का केवल दसवां भाग ही प्रयुक्त करते हैं। आप अपनी पूरी शक्तियों का उपयोग करें और तब आप परिणाम से चकित रह जाएँगे।

१६ वर्ष की अवस्था में कैसर, जो किसी काम से नहीं लगे थे, डरते-डरते फोटोग्राफी की एक दुकान के मालिक से मिले। उन्होंने कहा, "मैं नौकरी चाहता हूँ। मेरा खयाल है कि मैं दो महीने में आपका मुनाफा तिगुना कर सकता हूँ।"

"क्या कहा तुमने?" मालिक ने हँसते हुए कहा।

"जी हाँ, श्रीमान्! यदि आपका मुनाफा तिगुना करके न दिखा दूँ तो मैं बिना पैसा लिए ही काम करूँगा। और यदि मैं ऐसा कर लूँ तो अतिरिक्त मुनाफे में आधा बंटाना चाहूँगा।"

"यदि तुम मुनाफा तिगुना करके दिखा दो तो मैं तुम्हें अपना साझीदार बना लूँगा," मालिक ने विनोद में कहा।

कैसर ने बताया, "सबसे पहले मैंने दुकान पर एक बोर्ड लगाया जिसमें लिखा था—'एक ही दिन में फोटो तैयार किया जाता है।' मालिक ने कहा कि यह किसी तरह नहीं हो सकता। तब मैंने आश्वासन दिया कि अतिरिक्त काम मैं करूँगा और मैंने वास्तव में किया भी। कभी-कभी तो मुझे प्रात: चार बजे तक काम करना पड़ता था। मालिक ने मुझे चेतावनी दी कि ऐसा करने से तो स्वास्थ्य गंवा बैठोगे, किन्तु हुई एक विचित्र ही बात। अठारह घण्टे काम करने से मुझे कोई थकावट नहीं हुई। मेरा एक विशिष्ट लक्ष्य था। मैं खुश रहने लगा। मुझे पहले की तरह नींद की जरूरत नहीं रही। काम इतना अधिक बढ़ गया कि मुझे एक नया स्टूडियो बनाना पड़ा और सतत कार्य करना पड़ा। दो महीने के अन्त में मुनाफा करीब चौगुना हो गया। मैं साझीदार हो गया।"

कैसर का दूसरा सूत्र—यदि आप अध्यवसाय करते हुए काफी समय तक अपने काम में डटे रहें तो प्रतिरोध अपने-आप कमजोर पड़ जायगा।

कैसर से सम्बन्ध रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि उनमें जबरदस्त लगन है। उनके एक साझीदार ने बताया, "वे एक अलमस्त हाथी के समान हैं। वे मुस्कराते हुए आपकी ओर झुकते हैं। कुछ समय बाद आपको यह महसूस होगा कि आप उनकी इच्छानुसार ही काम कर रहे हैं।"

कैसर का यह गुण सर्वप्रथम परखने वालों में एक थे मैकगोवन, जो लोहे का धंधा करते थे। फोटोग्राफी के काम से ऊबकर कैसर विक्रेता (सेल्समैन) के काम के लिए मैकगोवन के पास गए।

मैकगोवन ने तीक्ष्णता से कहा, "ऐसी तो कोई नौकरी यहाँ नहीं है।"

किन्तु दो सप्ताह तक कैसर उनके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यहाँ चक्कर लगाते ही रहे। पन्द्रहवें दिन, पूर्व इसके कि मैकगोवन फिर उन्हें टरकाएँ, कैसर ने कहा, "मैं आपको एक बहुत जरूरी बात बताता हूँ। यहाँ बहुत-सी ऐसी चीजें हैं जो मैली हो जाने के कारण नहीं निकल पाई हैं। मैं उनपर पालिश कर दूँगा..."

"अच्छा, तो करो इस कबाड़ पर पालिश और बेच लो," मैकगोवन ने क्षुब्ध स्वर में कहा, "लेकिन आगे मुझे तंग न करना।"

कैसर ने काम शुरू कर दिया, किन्तु दूसरे दिन उन्होंने मैकगोवन को फिर पकड़ा। वे बोले, "श्री मैकगोवन, इस तरह तो काम चलेगा नहीं। बेकार की परेशानी के अलावा इन चीजों पर पालिश करने में भी बड़ी देर लग जाती है। मुझे मदद के लिए कुछ लड़कों की जरूरत है।"

"मैकगोवन ने एक बार फिर उनसे तशरीफ ले जाने को कह दिया। किन्तु दूसरे दिन कैसर फिर आ धमके। इस बार वे अपने साथ एक स्थानीय बैंकर को भी लाए।

बैंकर ने कहा, "मैकगोवन साहब, हेनरी कैसर आपसे कुछ रद्दी माल को खरीदने के लिए काफी रुपया उधार लेना चाहते हैं। वे कोई जमानत नहीं दे सकते, किन्तु उनकी लगन और ईमानदारी देखते हुए मैं उन्हें कर्ज देने को तैयार हूँ, बशर्ते कि कीमत ठीक हो।"

मैकगोवन ने ताज्जुब में होकर कहा, "अच्छा, भाई, अच्छा! हेनरी, मैंने तुम्हारी बात मान ली। अपनी मदद के लिए बीस लड़के ले आओ। मैं तुमसे पिंड छुड़ाने के लिए तुम्हें नौकरी पर रखे लेता हूँ।"

कैसर ने माल को मुनाफे में बेचा और तीन महीने के अन्दर वे स्टोर के बिक्री-मैनेजर हो गए।

अब सफलता के लिए कैसर का तीसरा सूत्र लीजिए। वे कहते हैं, पहले यह तय कीजिए कि आपकी कल्पनाएँ, आपके लक्ष्य क्या हैं— फिर उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न कीजिए। जितना आप सोचते होंगे उससे वास्तव में ये अधिक ही निकट होंगे।"

कैसर कहते हैं, "अनेक लोग कल्पनाएँ तो बड़ी अच्छी करते हैं, किन्तु ऐसा महसूस करते हैं कि उन्हें कार्यान्वित करना असम्भव है। वे अनिश्चय की स्थिति में रहते हैं और रोजमर्रा के घिसे-पिटे कामों में अपना समय नष्ट करते हैं। वे अपनी शक्ति यही सोच-विचार करने में व्यय करते हैं कि इन कल्पनाओं या स्वप्नों के मार्ग में क्या-क्या रुकावटें हैं।

"यदि आपको अपने मनोवाञ्छित कार्य का पता ही नहीं लगा है तो आप खुद से यह प्रश्न कीजिए, 'मैं जीवन में सबसे अधिक क्या चाहता हूँ?' यही आपका स्वप्न है। चाहे यह कितना ही हास्यास्पद और दुर्गम क्यों न प्रतीत हो, आप उसे प्राप्त कर सकते हैं। अतः सबसे पहले यह समझ लें कि आपके स्वप्न क्या हैं। फिर उन्हें अमल में लाने के उपाय कीजिए।"

हेनरी कैसर ने अपनी आकांक्षाओं को किस प्रकार यथार्थ रूप दिया? उनके पुत्र एडगर के शब्दों में सुनिये—

"द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारम्भ में मेरे पिता जहाजों का निर्माण करना चाहते थे। हरेक ने उन्हें यही बताया कि यह असम्भव है। अतः मेरे पिता ने सभी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्मचारियों को इस 'असम्भव कार्य' पर विचार-विमर्श करने के लिए बुलाया।

"हमने उन सारी बातों की, जो मार्ग में बाधक थीं, एक सूची बनाई। हमारे पास इस्पात, जहाजी कारखाने, कुशल कारीगरों, योजनाओं और धन का अभाव था। पिताजी ने एक-एक करके सभी कठिनाइयों को हल करने का प्रयास किया। उनके पास न तो जहाजों की कोई योजना थी और न योजनाकार ही। उन्होंने कहा, "ठीक है, हम स्वयं ही योजनाकार का का काम करेंगे।' उनकी कल्पना को सीमित करने वाला कोई पुराना अनुभव तो था नहीं, अतः उन्होंने जहाज-निर्माण का एक मौलिक तरीका निकाला, जो 'पूर्व-निर्माण' (प्रीफैब्रीकेशन) पर आधारित था।

इससे कुछ अन्य बाधाएं दूर करने में भी सहायता मिली। उपर्युक्त तरीके को कार्यान्वित करने में अब तक चालू तरीके की अपेक्षा कुशल कारीगरों की कम संख्या में आवश्यकता थी। हमने अपने कारखाने में जुड़ाई का काम करने के लिए बूढ़ी औरतों को रख लिया।

"इस प्रणाली में जहाजी-कारखाना कम जटिल था, अतः उसकी समस्या भी बहुत-कुछ दूर हो गई। बैंकरों ने जब देखा कि हमारी पहली कठिनाइयां हल हो गई हैं तो वे भी हमें धन देने को उद्यत हो गए।

"इस तरह यदि आप किसी कार्य के कठिन अंशों में से थोड़ा भी हल कर लें तो शेष सरल हो जाएगा। असफलता के कारण तभी भयावह प्रतीत होते हैं जब कि हम उन्हें सामूहिक रूप से देखते हैं। यदि हम उन्हें एक-एक करके देखें तो वे इतने कठिन नहीं लगेंगे।

"मेरे पिता संसार के सबसे सफल जहाज-निर्माता बने। वे प्रतिदिन एक जहाज का निर्माण करते थे और उन्होंने लगभग १,५०० जहाजों का निर्माण किया। वे ऐसा इसलिए कर सके, क्योंकि उन्होंने मार्ग की बाधाओं को जानने और उन्हें एक-एक कर दूर करने का प्रयत्न किया।"

हेनरी कैसर की सफलता का चौथा सूत्र—जनसेवा करें। ऐसी योजताएं खोजें जो सार्वजनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती हों। जितने ही अधिक लोगों का लाभ होगा, उतना ही आपका भी।

१९५४ में कैसर ने ७२ वर्ष की अवस्था में, हवाई में छुट्टियाँ बिताने का निश्चय किया। वहाँ होटल में कमरा प्राप्त करने में उन्हें बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। हजारों पर्यटकों को ठहरने का स्थान न मिल पाता। उन्होंने कहा, "बहुत-से लोग यहाँ धन व्यय करना चाहते हैं। मैं यहाँ कुछ अधिक ठहरकर होटल बनवाऊँगा।"

हवाई के कुछ उद्योगपतियों ने जब यह बात सुनी तो उन्होंने कैसर का मजाक उड़ाया। आखिर होटल बनाने की जगह ही कहाँ है? वैकीकी क्षेत्र में यदि कुछ जगह है भी तो वहाँ मिट्टी के मकान और गन्दी बस्ती है।

कैसर ने गन्दी बस्ती को ही खरीद लिया। उन्होंने अपने साझीदार फ्रिट्ज बर्न्स के साथ काम शुरू किया और ३० हजार घन-गज सफेद बालू वहाँ डलवा दी। इससे वैकीकी का वह गंदा क्षेत्र विस्तृत और सुन्दर तट में परिवर्तित हो गया। कुछ महीने बाद 'हवाई ग्राम्य होटल'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के पाँच हजार कमरों में से ८७५ बनकर तैयार हो गए। अब वहाँ ग्राहक भी खूब आने लगे और आते ही रहे। कैसर का कहना है कि जो जनता की भलाई की बात सोचते हैं अन्ततः उनका भी लाभ होता है।

सफलता का पांचवा सूत्र यह है कि अकेले ही किसी काम को पूरा करना कठिन होता है। आपको दूसरों की सहायता भी लेनी चाहिए।

कैसर महोदय कहते हैं, "अपनी प्रगति के लिए मैं ऐसे लोगों के सम्पर्क में रहता हूँ जो मुझसे अधिक बुद्धिमान हैं। उनकी बातों से मैं लाभ उठाता हूँ। मेरी यह धारणा है कि हर कोई किसी न किसी बात में मुझसे अधिक योग्य है।"

वे सभी की बातें सुनते और उनसे प्रश्न भी करते हैं। यदि कोई कर्मचारी उन्हें अच्छा सुझाव देता है तो वे उसकी सराहना करते और तत्काल ही उसे कार्यरूप में परिणत करने को कहते हैं। चाहे कोई भी व्यक्ति हो, यदि वह कुछ पहल करके दिखाता है तो वे उसे और अधिक उत्तरदायित्व सौंप देते हैं। परिणामस्वरूप, ६० कैसर कम्पनियों के प्रधान वे लोग हैं जो ३२ वर्ष से कम अवस्था में ही प्रबन्धक हो गए थे।

सफलता का छठा सूत्र यह है कि सफलता प्राप्त करने के लिए पूर्ण प्रयास करने की आवश्यकता है। ध्यान इधर-उधर नहीं बंटने देना चाहिए।

सफलता के लिए एक कीमत चुकानी पड़ती है। यदि आपको किसी अन्य बात की इच्छा हो—जैसे सामाजिक, मिलने-जुलने, ताश खेलने, सिनेमा देखने आदि की—तो आपको अच्छी तरह तौलकर देखना चाहिए कि समय और शक्ति को इसमें लगाने से क्या मुझे अपने जीवन-लक्ष्य में सहायता मिलेगी ?

सफलता के लिए भारी परिश्रम करना पड़ता है। प्रसिद्ध लोगों --जैसे क्यूरी-दम्पति, आइन्सटाइन, एडीसन, माइकेल एंजलो, पेडरेवस्की—की जीवनियां पढ़ें। इनमें से सभी और अन्य महान व्यक्ति भी तड़के से लेकर आधी रात के बाद तक काम करते रहे हैं। कैसर भी वैसा ही करते हैं। जब वे किसी नई योजना को शुरू करते हैं तो वे पूरी तरह से तन्मय होकर आगे ही बढ़ते जाते हैं।

सफलता का सातवाँ सूत्र यह है कि आप अपने कामों को यह सोचकर ही करें कि आपके जीवन का आज अंतिम दिन ही है।

हेनरी कैसर संसार के उन लोगों में हैं जिन्हें समय का बहुत ध्यान रहता है। पाँच घण्टे का उनका सोने का समय भी इस दृष्टि से उत्पादक है कि वे इस समय में नई-नई बातें सोचते हैं। वे सदैव अपनी चारपाई के पास कागज और पेंसिल रखते हैं। कभी-कभी तो वे रात के तीन बजे ही किसी को फोन करके कहते हैं, 'मुझे अभी-अभी एक विचार आया है।"

कैसर का विश्वास है कि यदि इधर-उधर से कुछ मिनट या घंटे बचाये जा सकें तो जीवन में अनेक उपयोगी वर्ष जुड़ सकते हैं। हर सुबह वे अपने दिमाग में एक सूची-सी बना लेते हैं कि आधी रात क्या-क्या काम समाप्त करने हैं। संध्या को वे पुनः उस पर विचार करते हैं। उनकी दृष्टि में हरेक कार्य इस तरह पूरा हो जाना चाहिए गोया किसी अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए कल वे जीवित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न होंगे। उनका प्रत्येक दिन साफ-सुथरे काम से आरम्भ होता है। इसी कारण उन्हें किसी समस्या को टालने के बजाय उस पर शीघ्र निर्णय करने को बाध्य होना पड़ता है।

उपर्युक्त सात सिद्धान्तों ने हनेरी कैसर को रुग्ण, हकला कर बोलने वाले तथा गरीब युवक से धनी, शक्ति-सम्पन्न, प्रतिष्ठित, दीर्घायु तथा सुखी बना दिया है। एक औसत आदमी भी इन्हीं सिद्धान्तों का सफलतापूर्वक प्रयोग कर सकता है।

संक्षेप में हेनरी कैसर के विचार ये हैं—सबसे पहले यह निश्चय कर लें कि आप क्या करना चाहते हैं और तब साहसपूर्वक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें, चाहें कार्य कितना ही असम्भव क्यों न प्रतीत हो। यदि आपने लक्ष्य को पूरा करने का दृढ़ संकल्प कर लिया है तो फिर आपके मार्ग में कोई बाधा न रहेगी।

—:o:—

सही और गलत

कुछ लोग सही को सही
कहने से
जान के दुश्मन हैं,
कुछ लोग गलत को गलत
बता देने से खन के प्यासे हैं
शेष जो हैं
वे सही को गलत
और गलत को सही
न मनवा पाने पर
झूठे हैं,
बड़ी परेशानी है,

बड़ा धर्म संकट है,
सही को सही
और गलत को गलत
कहने-सुनने
समझने, बताने वाले
लगता है,
दुनिया से
सभी कूच कर गए हैं,
नहीं के बराबर,
जो कुछ बाकी हैं,
वे सब शक्ति और
सामर्थ्य विहीन हैं
अन्धे हैं, बहरे हैं, गूंगे हैं
दीन हैं
स्थिति काफी विचित्र है
सही को सही और गलत को गलत
कहना
अपनी आदत में शुमार है
लोगों की
नाराजगी से
बेहद प्यार है,
यह बात अलग है
कि
जीना दुश्वार है,
बाल में बंधी हुई
हर वक्त सिर पर
एक तेज धार वाली
लटकती, तलवार है

—बनारसी सिंह—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज गंगा मुक्त हुई ! पर···?

—स्वातन्त्र्य वीर सावरकर

अंग्रेजों को पराजित कर हम लोगों द्वारा स्थापित स्वतन्त्र हिन्दुस्थान का मैं महाराज्य की संज्ञा से केवल देशाभिमान के कारण ही उल्लेख नहीं करता। आज हमारे इस स्वतन्त्र महाराज्य की चतुः सीमाओं में इतना भू-क्षेत्र समाहित है कि उसमें इंगलैण्ड फ्रांस, जर्मनी स्पेन स्विट्जरलैण्ड आदि आधे से अधिक योरोपीय देश भी समा सकेंगे। आज यह एक जीवन एक राष्ट्र और एक छत्र बन गया। छत्रपति शिवाजी द्वारा गोदावरी से कृष्ण तक के बीच में सीमित भू-भाग को भी मलेच्छों के हाथों से मुक्त करने पर समर्थ रामदास सरीखे साधु भी आनन्दावेग से डूब उठे थे। फिर आज तो सेतुबन्ध परमेश्वर से ऋषिकेश तक और पूर्वी सागर से पश्चिमी सागर तक का यह महादेश हमारी पितृभूमि ,और पुण्यभूमि एकछत्र हो गई है।

हकारे प्राचीन केल, चोल पाण्य राज्यों की राजधानियां, चन्द्रगुप्त की पाटलिपुत्र विक्रम की उज्जयिनी, शालिवाहन का प्रतिष्ठान, यादवों की देवगिरी, हरिहर बुक्का का विजय नगर इन सभी राज्य केन्द्रों को केन्द्रितकर एक राष्ट्र बनाकर हमने अपने पांडवों की प्राचीन राजधानी इन्द्रप्रस्थ में ही हिन्दू प्रस्थ की पुनः स्थापना की है। और इस महाराज्य पर सुदर्शन चक्रांकित ध्वज फहरा रहा है।

धार्मिक कर्तव्य के रूप में हमें प्रतिदिन जिनका नाम स्मरण करना पड़ता है, हमारे वे पुण्यक्षेत्र अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, रांची, अवन्तिका, पुरी, द्वारावती से जगन्नाथपुरी तक मथुरा की मीनाक्षी से कामरूप की कामाक्षी तक के हमारे पुण्यक्षेत्र आज स्वतन्त्र मुल्क और शुद्ध हो चुके हैं। हमें जिस मन्त्र को प्रतिदिन स्नान के समय कहना पड़ता है उस "गंगेय यमुने चैन गोदावरी सरस्वति ! नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन सन्निधि कुरू !" इस यन्त्र की वह गंगा, वह गोदावरी, वह सरस्वति, वह नर्मदा वह कावेरी, आदि हमारे पुण्यतीर्थ और सरिताएं भी इस भारतीय महाराज्य में आज विमुक्त और विशुद्ध होकर समा गई हैं। पर इन पुण्य सरिताओं में सिन्धु क्यों नहीं दिखती ? कहां है सिन्धु ?

हाय ! हाय ! इन पुण्य सरिताओं में पुण्यतम सरिता सिन्धु अभी तक इस महाराज्य से बाहर है ! हमसे अभी भी दूर है सिन्धु !

क्या कहते हो, अब सिन्धु को भूल जाएं ! उसके नाम को मन्त्र में से निकाल कर भविष्य में उसे अधूरा ही कहते जाएं ? नहीं तो ऐरे-गैरे नत्थू खैरे हमसे नाराज हो जाएंगे, हमसे डाह करने लगेंगे ! इसलिए हम सिन्धु से सम्बन्ध छोड़ दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं ! नहीं !! सारा विश्व भी हमसे डाह करने लगे, या सारे विश्व से हमें डाह करना पड़े तो भी हम सिन्धु से सम्बन्ध नहीं छोड़ेंगे ! भूल जाएं हम सिन्धु को ? सिन्धु बिना हिन्दु !! अर्थ बिना शब्द ! प्राण बिना शरीर ! असम्भव, असम्भव ! जब तक एक भी हिन्दू जीवित है, तब तक सिन्धु को भूलना सम्भव नहीं ।

जिसके तट पर हमारे प्राचीन वैदिक ऋषियों ने वैदिक ऋचाओं का साम गायन किया, जिसकी पुण्य सलिला को अपने संध्या-वन्दन के अर्घ्य दिये, जिसे अत्यादर से वैदिक देवताओं की श्रेणि में स्थान देकर, उसके सुन्दर से सुन्दर सूक्त की रचना की, उसे तुझे 'हे अम्बित में, नदीत में देवित में सिन्धु, हम कदापि न भूलेंगे ! तेरे प्रांगणों से जब हमारे प्राचीनत राजर्षि और ब्रह्मर्षि यज्ञों के प्राप्ति हुताशन में हवि समर्पित करते और दूर-दूर तक गगन में फैलती गई उनकी सुगन्धों से लालायित होकर इन्द्र, वरुण मरुतादि देव अपना-अपना हवि-भाग स्वीकार करने के लिए तेरे तट पर आते और सोमण के अनुरूप ही तेरे सलिल को पीकर प्रसन्न होते, उसे, तुझे हे सुर-सरित सिन्धु हम लोग कभी भी न भूलेंगे ।

'''पहले एक बार जब तक तू हम लोगों से ऐसे ही बिछुड़ी थी, तब भी तुझे परतन्त्रता के बन्दीगृह से मुक्त करने के लिए महाराष्ट्र की चतुरंगिणी सेना उत्तर पर चढ़ दौड़ी थी । क्योंकि राजा शिवाजी उत्तर विजय की कामना करते-करते ही स्वर्ग सिधारा था । उसकी उस अलृप्त इच्छा को पूर्ण करने के लिए नर्मदा पारकर बाजीराव ने चम्बल का ही पानी पीकर हमारे विजयिष्णु घोड़ों की पिपासा न बुझी थी । इसलिए उस मुगल बादशाह की दाढ़ी ही नोच लूंगा की गर्जना करते-करके बाजीराव दिल्ली पर चढ़ दौड़ा था । हमारे जयिष्णु अश्वों ने यमुना जल का प्राशन किया, गंगा जी का भी पानी पिया । पर उनकी विजय रूप सन्तुष्टी न हुई । इसलिए आगे बढ़कर उन्होंने शतद्रु (शतलज) पार की वितस्ता (झेलम) पार की तथा मलेच्छों को पादाक्रान्त करके जब उन्होंने अटक पर भगवाध्वज लहराया और तेरे तीर पर पहुंचकर, तेरे उस पवित्र सलिल का आकंठ प्राशन किया तभी उनकी विजय तृष्णा क्षण भर के लिए सन्तुष्ट हुई । तुझे अन्य कोई भी भूल जाए, तो भी है सुर-सरिते सिन्धु ! आर्य परम्पराओं का अभिमानी हिन्दू तुझे फिर से मुक्त किए बिना नहीं रहेगा !''

स्वतन्त्र होने पर भी भारत-मां का अंगभंग कौन आर्य भूल सकता है । मुसलमान और ईसाइयों के जहरीले षड्यन्त्र कौन राष्ट्रभक्त क्षमा कर सकता है । देश को अखंड बनाकर संसार को आर्य बनाने का लक्ष्य हमें पुकार रहा है'''क्या हम यह पुकार न सुनेंगे ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दृढ़ निश्चय के धनी बनो

"बेटा ! आज देश पर संकट है। सम्पूर्ण राष्ट्रजीवन-मरण के इस संघर्ष में अपनी आहुति डाल रहा है। और तू बार-बार कहने पर भी उधर ध्यान नहीं देता। क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता ? यदि देश न रहा तो यह धन-दौलत, गृह और सम्मान कुछ भी न रह जायगा। तुम्हारे जीवन की ये रंगीनियाँ कहीं ढूंढ़े भी न मिलेंगी। भोग-विलास व माया-मोह का जीवन कोई जीवन नहीं है बेटा !"

"वह जीवन व्यर्थ है जो संघर्षों से मुंह मोड़ ले। वह व्यक्ति जीने का अधिकारी नहीं जो साहस का एक डग भी नहीं बढ़ा सकता। वह सफलता की कल्पना भी नहीं कर सकता जिसके जीवन में कोई निश्चय नहीं। जो अपने सपनों का संसार बनाकर, उसको साकार करने की लालसा में भटका करता है संसार उसे जीने नहीं देता। शायद तुम नहीं जानते कि महाभारत सरीखा युद्ध जीतने का श्रेय अर्जुन को क्यों मिला ? असंख्य महारथियों को परास्त कर वह विजयश्री कैसे प्राप्त कर सका ? बेटा ! केवल कल्पना करके आज तक किसीने भी अपनी मंजिल नहीं पाई। केवल अपनी रक्षा और अपने आनन्द की बात सोचने वाला कभी सुखी नहीं रह सका।"--पिता की वाणी गूंज उठी।

—"तो कैसे विजय हुई अर्जुन की, किस प्रकार जीता उसने महाभारत। कैसे मिली उसे सुख-सुविधा ?

—"हूँ ! यदि तुम यही जानते होते तो इस प्रकार हाथ पांव ढीले करके न बैठते। समय पर तुम्हें यह मोह व्याप्त न हो पाता। लो सुनो—

"कुरुक्षेत्र का समरांगण महारथियों, वीरों और सैनिकों से भरा था। एक ओर थे असंख्य सैनिक और दूसरी ओर थे पांच पाण्डव। अर्जुन का गाण्डीव हाथ से छूट गया। मोहासक्त हो वह रुदन करने लगा। बोला—"क्या करूँगा मैं यह राज्य लेकर जो अपने ही स्वजनों की बलि देकर मिले।"

"कृष्ण ने बहुत समझाया। पर उसके समझ में कुछ न आया। बनाबनाया काम बिगड़ते देखकर श्रीकृष्ण ने जब उसे अपना विराट रूप दिखाया तो वह घबड़ा गया। लेकिन, क्या वह विराट रूप उससे गाण्डीव उठवा सका ? नहीं, उसने गाण्डीव तब उठाया जब उसका सारा सन्देह दूर हो गया उसके मोह पाश कट गए। जब उसके अन्तःकरण में विश्वास जगा। उसकी सुख-सुविधा तब आई जब उसने सारे भरतखण्ड का विचार किया।"

"महाभारत प्रारम्भ हुआ। इस महासमर के बीच ही सात महारथियों ने मिलकर अर्जुन के प्रिय पुत्र अभिमन्यु की हत्या कर दी। अधर्म अट्टहास कर उठा। अर्जुन वेदना-विह्वल हो सिसक पड़ा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकिन क्या उसका रुदन जयद्रथ का वध कर पाया ? नहीं। उसने अपने बेटे के खून का बदला खून से लेने के लिए प्रण किया। एक ऐसा निश्चय, जो अटल था। उसने प्रतिज्ञा की कि—"या तो कल सूर्यास्त तक अपने पुत्र के बलिदान का बदला लूंगा या प्रज्ज्वलित चिता में जल जाऊँगा।" वह क्षत्रिय का निश्चय था जिसे कालपुरुष भी बदलने में असमर्थ था। और दुनिया ने देखा कि दूसरे दिन सन्ध्या होने से पूर्व ही जयद्रथ मारा गया। अर्जुन की प्रतिज्ञा पूर्ण हुई।"

—'बेटा ! अर्जुन ने प्रतिज्ञा पहिले की, कार्य बाद में पूर्ण हुआ। उसने निश्चय पहले किया युद्ध बाद में। प्रथम संघर्ष, जीवन की बाजी और फिर विजय लाभ। पहिले राह पर चला फिर मंजिल पाई। उसने किन्तु परन्तु नहीं लगाया उसने यह नहीं सोचा कि—"चलो भगवान कृष्ण से कहें कि मेरे बेटे का बदला दिला दो, मेरी मदद करो। उसने यह नहीं सोचा कि यदि मैं मर गया तो द्रोपदी और सुभद्रा का क्या होगा ? उसके सामने था धर्म के अधिष्ठान का प्रश्न। वह आगे बढ़ा तो भगवान भी मदद के लिए आ गए। उसका साहस, उसका गाण्डीव और भगवान भी तभी सहायता कर सके। सुभद्रा और द्रोपदी भी तभी एक विजयी पति की पत्नी होकर गौरवान्वित हो पाई।"

—"और तू यहाँ बैठा आँसू बहा रहा है। अपने को कोस रहा है। मैं क्या कर सकता हूँ, की भाषा बोलकर कायरता का शिकार बन रहा है। यह मानव जीवन के लिए शोभा नहीं देता। हर व्यक्ति के अन्दर सर्वशक्तिमान् परमेश्वर का वास है। वह अजेय है। उसे कलंक न लगा। जो कार्य एक व्यक्ति कर सकता है उसे करने की सामर्थ्य दूसरे में भी है। यदि तुम इस बात को समझकर निश्चय करोगे तो कल तुम्हारा जीवन ही आगत भविष्य का महान् मार्गनिर्देशक बन जायगा और यदि यहीं बैठे घर-परिवार के मोहपाश में बंधे रहकर, अपने काल्पनिक संसार को उजड़ते देख आँसू बहाते रहे तो दुनिया तुम्हारे नाम पर थूकेगी। उठो ! इसलिए मोह त्यागकर मातृभूमि का ऋण चुकाओ।"

—'यही होगा पिताजी ! आप यह नहीं सुन पायेंगे कि आपका चन्दन प्रभु की पवित्र सत्ता को कलंक लगाकर भाग आया या उसने मोहासक्त हो संघर्षों से मुँह मोड़ लिया। आप आशीर्वाद दें कि मैं सफलता के पथ पर आगे बढ़ूँ। सदा की भाँति दुनिया आगे भी यही कहेगी कि यदि आगे बढ़ना हो, जीवन में कुछ कर पाने की लालसा पूर्ण करनी हो तो दृढ़-निश्चय के धनी बनो।"

—:०:—

बाधाएं आएं, आने दो।
दानवीय होने दो वार॥
छाती खोल खड़े रहो सम्मुख।
सहने को ये सभी प्रहार॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

TWO DIFFERENT VIEWS ON VARNASHRAM

Prof. V. S. K. Rao
ST. Xavier's College

Both Rishi Dayanand and Mahatma Gandhi were ardent supporters of Varnashram social system. While Dayanand in his magnum opus 'Satyarth Prakash' has devoted as many as four to five chapters elucidating varnashram in its minutest detail and enjoining the same for every right thinking person, the latter wrote in unequivocal terms in Harijan, 28.9.34 : 'Varna *thus conceived* is no man made institution but the law of life universally governing the human family. Fulfilment of the law would make life livable, would spread peace and content, end all clashes and conflicts, put an end to starvation and pauperization, solve the problem of population and even end disease and suffering.'

The words 'thus conceived' make the crucial difference between the Rishi's and the Mahatma's views on this most important aspect of sociological thinking. The Mahatma's basic conception of Varna is different from that of the Rishi's. Rishi Dayanand conceives Varna as based on a person's Guna, Karma and Swabhāva. He does not dispute the influence of parentage on a person's nature and actions but the parentage, ipso facto, is no determinant of a person's varna. In the social heirarchy a person gets the place he deserves by virtue of his merit, his actions and his nature. These may be influenced by so many factors, important among which are his or her parent's occupation, traits and heredity, the environment in which he or she is brought up, the education, the socio-economic and political surroundings and, last but not the least, the person's own samskārs of his past life. Thus, the occupation of one's father may be one of the several influencing factors in giving shape to his varna but by no means the most important or the only factor.

But Mahatma Gandhi's conception of varna is very much different ; nay, opposed to that of Rishi Dayanad's. For the Mahatma, the varna is determined 'by birth' meaning thereby that a person is born in a particular varna—that of his father's. "Varna is intimately, if not indissolubly, connected with birth, and the observance of the law of varna means the following on the part of us all of the hereditary and traditional calling of our forefathers in a spirit of duty."

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(Harijan—28-9-34, pp. 260). When asked—"What is your definition of varna ?" Mahatmaji replied : "Varna means pre-determination of the choice of man's profession. The law of varna is that a man shall follow the profession of his ancestors for earning his livelihood —varna therefore is in a way the law of heredity. It is not a human invention, but an immutable law of nature—the statement of a tendency that is ever present and at work like Newton's law of gravitation. Just as the law of gravitation existed even before it was discovered, so did the law of varna." (Young India, 24-11-1927, pp. 390).

Mahatma Gandhi's concept of varna was very much similar, if not altogether identical, to the caste system as it is prevalent in our society. What Gandhiji decried was untouchability and lack of dignity of labour but advocated caste rigidities based on birth. When Dr. Ambedkar issued a statement on 7th Feb. 1933 saying that "The outcaste is a by-product of the caste system—Nothing can emancipate the outcastes except the destruction of the caste system." Gandhiji replied (in Harijan of 11.2.1933, p.3) "I do not believe the caste system, even as distinguished from Varnadharma, to be an odious and vicious dogma. It has its limitations and its defects but there is nothing sinful about it, as there is about untouchability—It is as wrong to destory caste because of outcaste as it would be to destroy a body because of an ugly overgrowth on it."

But the most interesting aspect of his views is revealed when he gives the source of his inspiration. Asked—"Is the doctrine of varnadharma, as you have expounded it, to be found in Shastras, or is it your own ?" Gandhiji replied—"Not my own. I derive it from the Bhagvatgita." "But the Bhagvatgita says varna is according to guna and karma. How did you bring in birth ?" and Gandhiji replied again : "It lays down principles and leaves you to find the application for yourself. The Gita does talk of varna being according to Guna and Karma but Guna and Karma are inherited by birth. Lord Krishna says, all varnas have been created me by—चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टम् *i e.* I suppose by birth. The law of varna is nothing, if not by birth."

The Maharshi on the other hand is forthright in asserting that "a man or a waman should belong only to that varna for which he or she is *fit*." Then quoting an aphorism from Āpastamba he says, "A low-born ascends to a higher varna by doing righteous deeds. Similarly, by doing unrighteous deeds, a man born in higher classes descends to a lower class for which he is fit and should be regarded as such. (Light of Truth, Ch. IV, pp. 129)" On the question of heredity and influence of one's father on one's varna, Maharshi Dayanand had the following to say—

Question : How can that body which is the result of the combination of reproductive elements (male or female) of a particular varna, be so altered as to be fit to belong to another varna ?

Answer : The Bhahmanic character of the body is not due to the reproductive elements. But it depends on study, thinking, the

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

reading of all the Vedas, fully understanding the relation between the world and the objects, truthfulness, good behaviour, etc. (Light of Truth—Ch. IV, pp. 125).

And then in his characteristic rugged boldness he asks—"If the son of a poor man gets rich, should he throw away his riches, because he is proud of his parent's poverty? Should the son of a blind man do away with his eyes? Should the son of an evil-doer be himself an evil-doer? No, Never" (*Ibid*).

Swami Dayānand never equated varna with caste. Caste is rigid and based on birth; varna is a sort of division of labour, not based upon birth but upon quality (*guna*) action (*Karma*) and temperament (*Swabhāva*). In fact, varna is much more than mere division of labour. It is more intrinsic and more spiritual. It is a sociological unit based upon biological aptitude. In this wider sense the varna differs from the caste system with its arbitrary rigidity on the one hand the Trade-guilds of modern West with their materialistic obsession, on the other hand. On the important question of marriage and the status of women, in the varna heirarchy, there is significant difference between the two leaders. An esteemed friend of Gandhiji, presumably a woman wrote to him "From your recent writing on varna in the Harijan it seems that the principle of varna adumbrated by you is intended to apply only to men—what then about women?" And Gandhiji wrote in reply—"In the resuscitated varnadharma, as I conceive it, a girl before her marriage will belong to the varna of her father, just like her brother. Inter-marriages between different varnas will be rare. A girl will therefore retain her varna unimpaired even after her marriage. But should the husband belong to a different varna, then on her marriage, she would naturally adopt his varna and relinquish that of her parents."

Contrast this view expressed by the Maharshi Dayanand—"Whatever holds good in case of males is equally true of females", and "let the marriages take place in the same varnas and the varna system should be based on merits, profession and temperament." Quoting from Manusmrit (IX-89) he reiterates—Boys and girls may remain unmarried upto the time of death, but they should not be married to an unsuitable person, *i.e.* one who is of different qualities, different tendencies and different temperaments." About the mobility of 'Varna' also there is interesting contrast between the Mahatma and the Maharshi. The following dialogue brings it out clearly. The following appeared in Harijan of 24-11-1927.

Question : If a man practices a profession which does not belong to him by birth, what varna does he belong to?

Gandhiji's Answer : According to the Hindu belief, he belongs to the varna in which he is born, but by not living upto it, he will be doing violence to himself and becomes a degraded being—a *patita.*

Question : A Shudra does an act which belongs to a Brahman by birth. Does he become a patita?

Answer : A Shudra has as much right to knowledge as a

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Brahmana, but he falls from his state if he tries to gain his livelihood through teaching.

Question : But may not a man follow a profession after his heart?

Answer : But the only profession after his heart should be the profession of his father.

A similar question put to Dayanand reveals the difference.

Question : Can the children of a non-brahmana parents be ever brahmanas ?

Dayanand : Yes, they have been, they are and they shall be. The Chhandogya Upanishad quotes the instance of sage Jabali who belonged to uncertain family and yet became a brāhmana. Similarly, according to Mahabharata, Viswāmitra belonging to a Kshatriya family and sage Mātanga belong-to a very low chandala family became Brahmanas.—Light of Truth, Ch. IV, pp. 124-125).

Further, in the same chapter Maharshi Dayanand says—'The upper classes will always bear in mind that if their children would remain ignorant, they would have to go down to the level of the shudras. These children will also fear that if they would not keep up their level of conduct and will not acquire education, they would be compelled to be classed as shudras. Moreover, the lower classes will have an incentive to climb upto the higher classes."

While on this point, it is difficult to keep off the temptation to reproduce the following dialogue which seems to represent the most revolutionary thinking in sociology :—

Question : If a man has only one son or daughter and that one happens to join another varna, then who will attend to the wants of the parents ? It will be the end of the family also. What arrangement should there be ?

Dayanand : Neither there will be lack of attendance nor loss of family as they will get in exchange of their sons and daughters suitable heirs by the arrangement of the educational and political departments.

जन-ज्ञान के लिए लेख और इसका वार्षिक शुल्क श्री पंडित भगवानदेव शर्मा, संपादक जन-ज्ञान, महर्षि दयानन्द योगाश्रम, टंकारा (गुजरात) के पते पर भेजें।

मुद्रक और प्रकाशक श्रीमती राकेश रानी द्वारा रायसीना प्रिंटरी, दिल्ली में मुद्रित और जन-ज्ञान कार्यालय, नई दिल्ली-५ से प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हरिनगर शुगर मिल्स

लिमिटेड

की

बनी हुई शुद्ध और सर्वोत्तम

चीनी

पो० आ० HARI NAGAR (चम्पारन)

रेलवे स्टेशन—हरिनगर (एन. ई. रेलवे)

हेड आफिस

कालबा देवी रोड, बम्बई-२

मिल ओफिस—HARI NAGAR SUGAR MILLS

चम्पारन (बिहार)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा का सन्देशवाहक

जन-ज्ञान (मासिक)

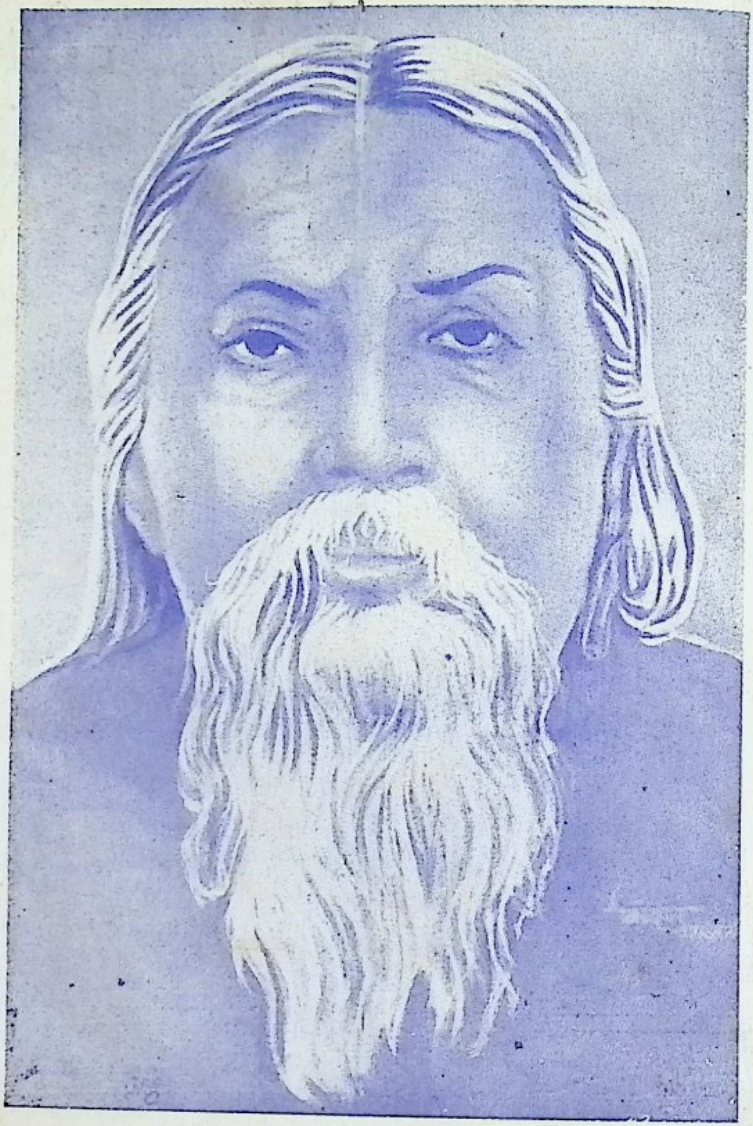

"वेदों का भाष्य करने के बारे में मेरा विश्वास है कि चाहे अन्तिम पूर्ण अभिप्राय कुछ भी हो, किन्तु इन बातों का श्रेय महर्षि दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उसने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया था। चिरकालीन अव्यक्त और अज्ञान—परस्पर के अंधकार में से सूक्ष्म और मर्मभेदी दृष्टि से उसीने सत्य को खोज निकाला था। जंगली लोगों की रचना कही जाने वाली पुस्तक 'वेद' के भीतर उसके धर्म पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होंने ही किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुंजी प्राप्त की है, जो युगों से बन्द थे। उसने बन्द पड़े हुए झरनों का मुख खोल दिया।"

—अरविन्द घोष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi